खण्ड-409, अंक-2
मंगलवार, 3 फाल्गुन, शक संवत् 1915
(22 फरवरी, 1994 ई0)

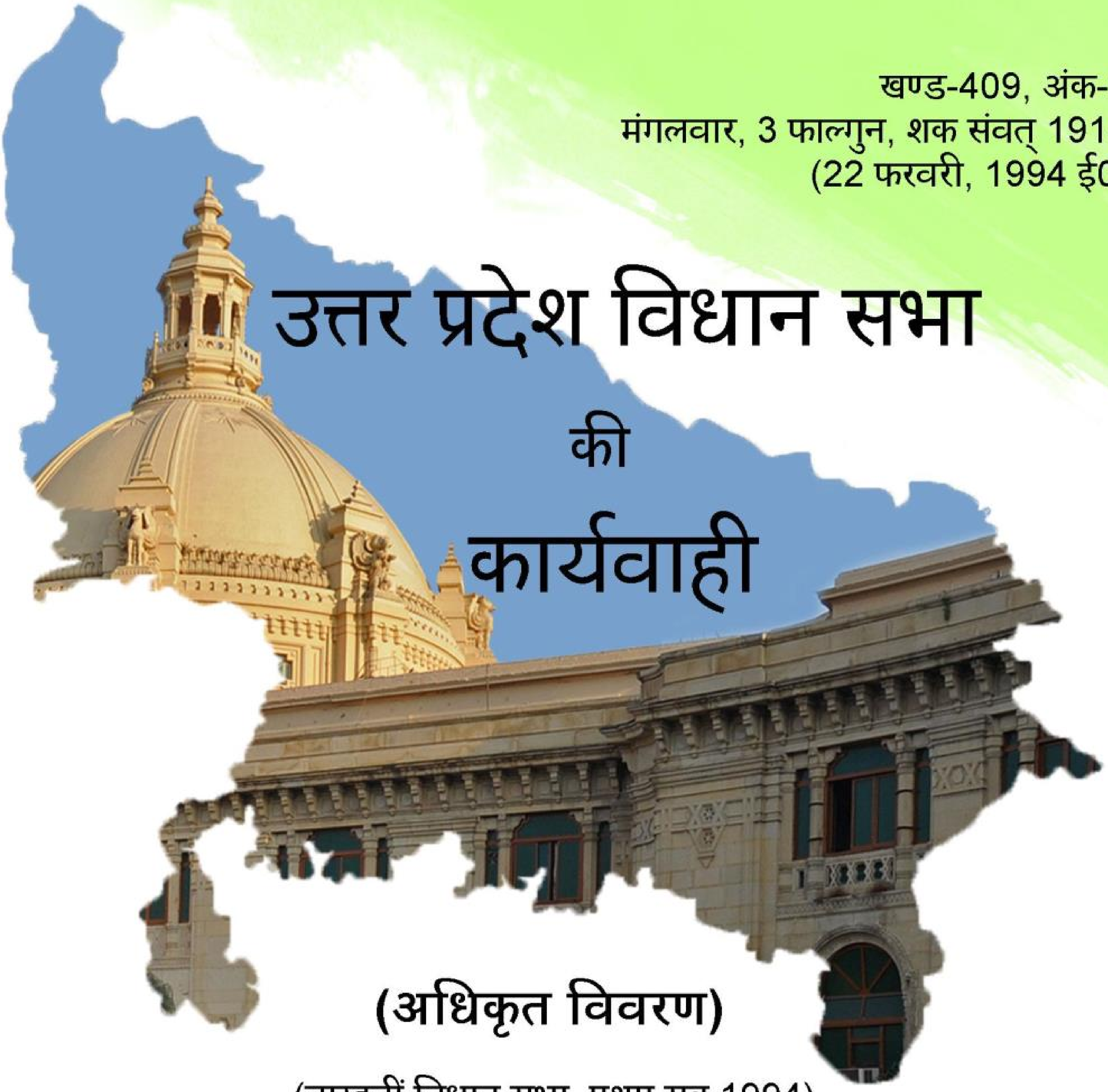

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(बारहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 1994)

खण्ड 409 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
1994

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्रीमती विमला सिंह, श्री मोहम्मद शमीम अंसारी, श्री गणेश चन्द्र कांछी, सरदार तेजा सिंह, श्री बद्री प्रसाद पालीवाल, श्री मदन मोहन मिश्र, श्री कमरुद्दीन, श्री महाबीर सिंह राणा, श्री गंगा-स्वरूप भटनागर, श्री शिवराम राय, श्री मोहम्मद रफी खां तथा श्री मुजफ्फर हसन के निधनपर शोकोद्गार . . . . . (जारी) . .	1–15
प्रख्यात नर्तक श्री गोपी कृष्ण के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करने की मांग . .	16
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्रीमती विमला सिंह, श्री मोहम्मद शमीम अंसारी श्री गणेश चन्द्र कांछी, सरदार तेजा सिंह, श्री बद्री प्रसाद पालीवाल, श्री मदन मोहन मिश्र, श्री कमरुद्दीन, श्री महाबीर सिंह राणा, श्री गंगा-स्वरूप भटनागर, श्री शिवराम राय, श्री मोहम्मद रफी खां तथा श्री मुजफ्फर हसन के निधन पर शोकोद्गार	16–20
गुजरात के मुख्यमंत्री एवं कुशल नेता श्री चिमन भाई पटेल के निधन पर शोकोदगार	20–27

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 22 फरवरी, 1994

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :—

अजय प्रताप सिंह उर्फ लल्ला भइया, श्री	गोण्डा
अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
अफजाल अंसारी, श्री	गाजीपुर
अमित अग्रवाल, श्री	मेरठ
गजराज सिंह, श्री	गाजियाबाद
जगत सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
जयपाल सिंह, श्री	मेरठ
देवेन्द्र कुमार सिंह, श्री	ललितपुर
बशीर, श्री	हमीरपुर
बाबू राम यादव, श्री	मैनपुरी
बाल गोविन्द राजवंशी, श्री	सीतापुर
मण्डलेश्वर सिंह, श्री	आगरा
मनव्वर हसन, श्री	मुजफ्फरनगर
महेन्द्र अरिदमन सिंह राणा, श्री	आगरा
राम चन्द्र, श्री	सहारनपुर
मोहम्मद आजम खां, श्री	रामपुर
रतन लाल पंवार, श्री	मुजफ्फरनगर
रमापति शास्त्री, श्री	गोण्डा
राम कृष्ण वर्मा, श्री	मेरठ
राम दवर, श्री	जौनपुर
राम पाल सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
राम सेवक सिंह, श्री	इलाहाबाद
रिजवान जहीर उर्फ रिज्जू भइया, श्री	गोण्डा
लक्ष्मी चन्द्र, श्री	बुलन्दशहर
लाल मणि प्रसाद, श्री	बस्ती
विश्वम्भर सिंह, श्री	मथुरा
वीरेन्द्र मोहन सिंह, श्री	पीलीभीत
संदीप अग्रवाल, श्री	मुरादाबाद
सन्त बक्श रावत, श्री	लखनऊ
समीर भाटी, श्री	गाजियाबाद
सुधीर कुमार बालियान, श्री	मुजफ्फरनगर
सुरेश संगल, श्री	मुजफ्फरनगर
हरक सिंह रावत, श्री	गढ़वाल
हरदेव सिंह, श्री	बाराबंकी
हरी किशन श्रीवास्तव, श्री	कानपुर (देहात)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(विधान सभा की बैठक मन्डप लखनऊ में दिन में 11 बजे अध्यक्ष, श्री धनीराम वर्मा की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।)

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्रीमती विमला सिंह, श्री मोहम्मद शमीम अंसारी, श्री गणेश चन्द्र कांछी, सरदार तेजा सिंह, श्री बद्री प्रसाद पालीवाल, श्री मदन मोहन मिश्र, श्री कमरुद्दीन, श्री महावीर सिंह राणा, श्री गंगा स्वरूप भटनागर, श्री शिवराम राय, श्री मोहम्मद रफी खां तथा श्री मुजफ्फर हसन के निधन पर शोकोद्गार (जारी)

*मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज मुझे अत्यन्त-वेदना के साथ सदन को सूचित करना पड़ रहा है कि इस माननीय सदन के 11 भूतपूर्व माननीय सदस्यों का निधन हो गया है और उनमें से कई माननीय भूतपूर्व सदस्य ऐसे भी हैं, जिनका रिश्ता स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा रहा। जो उन्होंने आजादी की लड़ाई में शानदार भूमिका अदा की है, उससे हमारा देश ऋणी रहेगा और ऐसे सभी माननीय सदस्य जिन्होंने समाज में, कई ऐसे शिक्षण संस्थानों में भी रह कर देश की और समाज की सेवा की है, गरीबों के लिए, किसानों के लिए, मजदूरों के लिए और दलितों और पिछड़े लोगों के लिए भी संघर्ष किया, महिलाओं के उत्थान के लिए भी संघर्ष किया और जीवन भर अपना जीवन लगाया। इस सदन में जो उनकी भूमिका रही है समाज और प्रदेश के लिए, सदन भी उनका ऋणी है, क्योंकि जो कार्य-शैली सदन की सेवा में उनकी रही है, उसे भुलाया नहीं जा सकता है। आज हम सब उनके निधन से दुःखी हैं।

हम सबसे पहले श्रीमती विमला सिंह जो जनपद गाजियाबाद की निवासी थीं, 12 अप्रैल, 1993 को उनका निधन हो गया। 1985 में वह गाजियाबाद से कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा सदस्या निर्वाचित हुई थीं। वह शिक्षण संस्थान, महिला उत्थान के लिए कई संस्थाओं से जुड़ी रहीं। वह गाजियाबाद जनपद में एक प्रखर समाज सेविका रहीं, आज उन्हें हमारे प्रदेश ने खो दिया है। इनके निधन से कांग्रेस पार्टी के लोग तो दुःखी हैं ही, लेकिन हम सब सदन के लोग भी उनके निधन से दुःखी हैं। उनके दुःख में हम सब शामिल हैं। हमारी आपसे प्रार्थना है कि हमारी और हमारे दल की संवेदनाएं उनके शोकाकुल परिवार तक सदन की ओर से भेजने की कृपा करें।

स्वर्गीय मोहम्मद शमीम अंसारी साहब जनपद बाराबंकी के निवासी थे और 1977 में पहली बार जनता पार्टी के टिकट पर इस सदन में चुनकर आये थे। हमें भी उनके साथ काम करने का मौका मिला। वह स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की प्रेरणा से राजनीति में आये उनके साथ रहे और चौधरी साहब की नीति और कार्यक्रमों से चलकर यहां के किसानों, मजदूरों को चौकाने का काम किया और आज वह हमारे बीच नहीं हैं। इस सदन की सेवा उन्होंने भी की है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि मोहम्मद शमीम साहब के शोकाकुल परिवार, संबंधी और दोस्तों तक हमारे सदन की ओर से संवेदनाएं भेजने की कृपा करें। मान्यवर, स्वर्गीय गणेश चन्द्र कांछी से आप स्वयं परिचित थे

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

और आप स्वयं भी उनके सम्पर्क में रहे हैं । मान्यवर, कांग्रेस में रहते हुए भी हमारे उनके निजी सम्पर्क थे, उनका जो विधान सभा चुनाव क्षेत्र था, वह हमारे चुनाव क्षेत्र से जुड़ा हुआ है । उनका निधन 12 नवम्बर, 1993 को हो गया, वे लगभग 81 वर्ष के थे । वे 1952, 1957 और 1962 में लगातार एम0एल0ए0 रहे । वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । मुझे उनके निधन पर अफसोस है । मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैंने अपना एक शुभ चिंतक खो दिया है । पिछले साल जब कांछी महासभा का सम्मेलन हुआ था, तो कांग्रेस में रहते हुए, उसमें जो विचार उन्होंने मेरे प्रति व्यक्त किये थे, उसके लिये मैं उनका जीवन भर आभारी रहूंगा । उन्होंने लगातार जनपद मैनपुरी में समाज की सेवा की है । उनकी बड़ी लोकप्रियता थी । कांग्रेस पार्टी ने अपना एक बहुत बड़ा नेता खो दिया है और मैनपुरी जनपद ने एक बहुत बड़ा समाजसेवी खो दिया है । हम लोग उनके निधन से दुःखी हैं । उनके परिवार तक हमारी, सदन की और हमारी पार्टी की संवेदनायें भेजने की कृपा करें ।

सरदार तेजा सिंह का निधन 29 दिसम्बर, 1993 को हो गया । वे लगभग 90 वर्ष के थे । उनका जन्म 1903 में सरगोधा (पश्चिमी पाकिस्तान) में हुआ था । वे 1952, 1957, 1962 में इस सदन के सदस्य रहे और कई शिक्षा संस्थाओं से जुड़े रहे । गाजियाबाद ने एक बहुत बड़ा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया है । हम आपसे निवेदन करते हैं कि उनके परिवार तक मेरी, इस सदन की और मेरी पार्टी की ओर से शोक संवेदनायें भेजने की कृपा करें ।

स्वर्गीय बद्री प्रसाद पालीवाल के बारे में आपसे ज्यादा हम कुछ नहीं जानते हैं क्योंकि यह आपके बहुत नजदीकी रहे हैं । आपने उनके साथ रहकर बहुत प्रेरणा ली है । सही बात कहने में पालीवाल जी कभी हिचकिचाते नहीं थे । पार्टी में रहकर भी वह सही बात कहते थे । उन्होंने कांग्रेस पार्टी की बैठक में जिस तरह से मेरे प्रति विचार व्यक्त किये थे उनको मैं कभी भूल नहीं सकता हूं । हम उनको केवल प्रणाम ही कर लेते थे । लेकिन बड़े दुर्भाग्य की बात है कि उनका सानिध्य नहीं रहा आप लगातार उनके साथ जुड़े रहे, जब आप कांग्रेस पार्टी में थे । आप स्वयं उनके ही साथी थे । जिस विधान सभा क्षेत्र से वह आते थे, वहीं से आप भी सदस्य हुए । उनके निधन से हमने एक बहुत बड़ा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया है । उनका एक आदर्श जीवन था ।

इटावा में कांग्रेस पार्टी के अन्दर उनका बहुत बड़ा सम्मान था । और उन्होंने अपनी अलग छाप बना रखी थी मैं वह बात नहीं कहना चाहता हूं जो उन्होंने कांग्रेस पार्टी की बैठक में चौधरी साहब का नाम जोड़कर कही थी । आज इटावा जनपद में सभी लोग दुःखी हैं । कांग्रेस पार्टी के ही लोग दुःखी नहीं हैं, उनके निधन से हम सभी लोग दुःखी हैं । इटावा के किसी भी दल का कोई सदस्य हो वह उनका सम्मान करता था उनके निधन से हम सभी दुःखी हैं । आप को मैं बताना चाहता हूं कि उनकी मृत्यु के बाद मैं उनके परिवार में गया था तो उनके परिवार ने उसी तरह से मुझे आदर दिया जिस तरह से पालीवाल जी देते थे और सम्मान करते थे । जबकि वह हमसे बड़ी उम्र के थे मान्यवर, मेरी, इस सदन की और मेरी पार्टी की पूर्ण संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री मदन मोहन मिश्र का निधन 20 जनवरी, 1994 को रायबरेली में हो गया, वे लगभग 78 वर्ष के थे । वह 1967 और 1969 में इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । दोनों बार हम भी इस सदन के सदस्य रहे । हमारा और उनका सम्पर्क भी था । विधान सभा के अलावा भी हमारा उनका बहुत सम्पर्क था । वह एक बहुत बड़े स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और कई सहकारी संस्थाओं से जुड़े रहे । उन्होंने समाज की बहुत सेवा की । उनके निधन से हम लोग दुखी हैं । मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी, इस सदन की और मेरी पार्टी की ओर से शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री कमरुद्दीन का निधन 26 जनवरी, 1994 को हो गया वे लगभग 91 वर्ष के थे । उनका जन्म 1903 में जनपद मुजफ्फरनगर में हुआ था । वे 1958 में इस सदन के सदस्य रहे । मुजफ्फरनगर जनपद में उन्होंने अपनी ख्याति प्राप्ति की थी वे बहुत बड़े समाजसेवी और मृदुभाषी थे मुजफ्फरनगर की जनता ने एक बहुत बड़े समाजसेवी को खो दिया है । मेरी प्रार्थना है कि आप उनके परिवार तक मेरी शोक संवेदनाएं भेजने की कृपा करें ।

श्री महावीर सिंह राणा का निधन दो फरवरी, 1994 को हो गया वह विधान परिषद् के सदस्य रहे और इस विधान सभा के भी सदस्य रहे । वह जनपद सहारनपुर के रहने वाले थे और जब सदन में कुछ कड़वाहट होती थी तो रामसरन दास और उनमें कुछ तकरार करा देते थे । उस तकरार से सदन का माहौल बदल जाता था और एक खुशी का माहौल हो जाता था । आप बड़े व्यवहार कुशल और मृदुभाषी थे । आपने लगातार कांग्रेस पार्टी में रहकर सेवा की है और उसके अन्दर एक स्थान बनाया है । उनको दोनों सदनों का सदस्य बनने का सौभाग्य मिला और सेवा करने का अवसर मिला । आज वह हमारे बीच नहीं रहे । उनकी मृत्यु से हम लोग दुखी हैं । मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

स्वर्गीय गंगा स्वरूप भटनागर का निधन 8 फरवरी, 1994 को सीतापुर में हो गया । वह 1967, 1974 और 1985 में सीतापुर जिले से इस विधान सभा के सदस्य रहे उन्होंने इस सदन की बहुत सेवा की है । और सीतापुर जनपद में उन्होंने जनता की बहुत बड़ी सेवा की है सीतापुर में उनका बड़ा सम्मान था एक बात मुझे याद है कि जब मैं सीतापुर से लखनऊ तक पदयात्रा कर रहा था तो उन्होंने उस पर अपनी टिप्पणी की थी उन्होंने सदन में माहौल ही बदल दिया था । सत्ता पक्ष की ओर से खड़े होकर जो कुछ उन्होंने कहा वह लाईब्रेरी में है वह रिकार्ड में है हमारे प्रेम में उन्होंने कहा था । हम उनको सम्मान देते हैं हमारा उनसे परिचय भी था, वह हमसे अलग से भी सीतापुर की समस्याओं के बारे में कहा करते थे । समाजसेवा में उनकी बड़ी रुचि थी । वह लगातार बीमार भी रहे और जब मैं उनको देखने गया तो उन्होंने उस समय भी अपने क्षेत्र की समस्याओं को रखा । उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था डाक्टर निराश थे । उस समय वह स्वस्थ हो गये और आज हमारे बीच नहीं हैं । वह जिला परिषद् के सदस्य भी रहे, ब्लाक प्रमुख भी रहे और शिक्षण संस्थाओं से

जुड़े रहे । उनके निधन से सीतापुर के जनपद ने एक महान समाजसेवी खो दिया है । हमारी प्रार्थना है कि आप उनके परिवार तक, उनके सभी संबंधियों तक हमारी संवेदना भेजने की कृपा करें ।

श्री शिव राम राय का निधन 11 फरवरी, 1994 को हो गया । वे आजमगढ़ के निवासी थे और आजमगढ़ जनपद से 1952 में विधान सभा के सदस्य रहे और 1977 में लोक सभा के भी सदस्य रहे, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, वह कई बार जेल भी गये, कई सहकारी समितियों व सामाजिक संस्थाओं से वह जुड़े रहे । जनपद आजमगढ़ ने भी एक महान सपूत को खो दिया है । हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार तक, उनके संबंधियों तक हमारी संवेदना भेजने की कृपा करें ।

स्वर्गीय मोहम्मद रफी खां का निधन 17 फरवरी, 1994 को लखनऊ मेडिकल कालेज में हो गया । वह शाहजहांपुर के निवासी थे । वह 1962, 1967, 1974 में और 1977 में 4 बार इस सदन के सदस्य रहे । उन्होंने इस सदन की बहुत बड़ी सेवा की, आजीवन राजनीति में रहे । वह मिलनसार और बहुत बड़े समाजसेवी थे । जनपद शाहजहांपुर ने भी एक योग्य समाजसेवी खो दिया है । हमारी आपसे प्रार्थना है कि उनके परिवार तक हमारी संवेदना भेजने की कृपा करें ।

स्वर्गीय मुजफ्फर हसन का ऐसे मौके पर आज शोक प्रस्ताव हो रहा है जबकि दूसरी तरफ दफनाने का काम हो रहा है । आज इलाहाबाद और इलाहाबाद के आसपास के सभी लोग उनके निधन से दुखी हैं । 1945, 1952, 1957, 1962, 1967 और 1977 में विधान सभा के सदस्य रहे । वह इस प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं में से थे, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे । वह 1921 से 1944 तक 9 बार जेल गये, कांग्रेस पार्टी में अच्छे पदों पर रहे और उत्तर प्रदेश के मंत्रिमण्डल में कई बार मंत्री भी रहे । उन्होंने इस प्रदेश की, इस सदन की, इस देश की बहुत बड़ी सेवा की है जिसको हम सभी हमेशा याद करेंगे । आज पहला अवसर है और बहुत कम समय ऐसे आते हैं कि एक तरफ उनके अंतिम दर्शन करने के लिए लोग इकट्ठा हो रहे हैं और हम लोग भी यहां पर शोक व्यक्त कर रहे हैं । सदन की ओर से, हमारी ओर से, पार्टी की ओर से हमारी संवेदना उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें ।

*नेता विरोधी दल (श्री कल्याण सिंह)–

माननीय अध्यक्ष जी, आज निधन के निदेशों में अनेकों ऐसे गणमान्य व्यक्तित्व का नाम सम्मिलित है जिनका न केवल अपने जनपद में बल्कि प्रदेश और देश की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रहा है, उनमें से अनेक व्यक्तित्व ऐसे हैं जिन्होंने भारतवर्ष के स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया और आज हम सब स्वतंत्र हैं । उसके लिए इन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का बलिदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है । माननीय नेता सदन ने दिवंगत आत्माओं के प्रति जो शोकोद्गार व्यक्त किए हैं, मैं उनके साथ अपने को सम्बद्ध करता हूं ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मान्यवर, श्रीमती विमला देवी–यह कांग्रेस के टिकट पर 1985 में मोदीनगर से इस सदन की सदस्या निर्वाचित हुई थीं । वे सामाजिक, राजनीतिक कार्यकर्ता थीं और विभिन्न टेक्निकल संस्थाओं से उनका संबंध था । शिक्षा में उनकी विशेष अभिरुचि थी । सामाजिक दृष्टि से दहेज विकृति के विरुद्ध उन्होंने सदैव संघर्ष किया । गाजियाबाद जनपद ने एक निःस्वार्थ समाजसेवी और एक लोकप्रिय नेता खो दिया है । आपसे प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं भेजने की कृपा करें ।

मान्यवर, मोहम्मद शमीम अंसारी–यह नवाबगंज, जिला बाराबंकी से जनता पार्टी के टिकट पर 1977 में निर्वाचित हुए थे । इस माननीय सदन के सदस्य के रूप में वे एक लोकप्रिय जनप्रतिनिधि थे । समाज के सभी वर्गों का विश्वास और सम्मान उन्हें प्राप्त था, उन्होंने समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा की । उनके निधन से बाराबंकी जनपद ने एक कुशल समाज सेवी खो दिया है । आपसे प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, श्री गणेश चन्द्र काछी का निधन 12 नवम्बर, 1993 को जिला मैनपुरी में हो गया । उनकी आयु लगभग 85 वर्ष की थी । वे अत्यन्त ही लोकप्रिय जनप्रतिनिधि थे । तीन-तीन बार भारी बहुमत से इस माननीय सदन के सदस्य के रूप में निर्वाचित होकर आये । वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे । तीन-तीन बार कारागार की यंत्रणायें उन्होंने सहीं । कांग्रेस के विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन किया । मैं समझता हूं कि जनपद मैनपुरी ने श्री गणेश चन्द्र काछी के रूप में एक कुशल समाजसेवी और एक अच्छा राजनीतिज्ञ खो दिया है । आपसे प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, सरदार तेजा सिंह का निधन 29 दिसम्बर, 1993 को हो गया, उनकी आयु लगभग 90 वर्ष की थी । विधान सभा में वे तीन बार सदस्य निर्वाचित होकर आये । अपने क्षेत्र में और अपने जनपद में वे बहुत लोकप्रिय थे । विशेष रूप से शिक्षा के प्रति उनकी अभिरुचि थी । वे अध्यापक थे । उनके उठ जाने से गाजियाबाद जनपद ने एक अच्छा शिक्षक, एक अच्छा राजनेता और अच्छा समाजसेवी खो दिया है । आपसे प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, श्री बद्री प्रसाद पालीवाल, इनका निधन 15 दिसम्बर, 1993 को हो गया । उनकी आयु लगभग 85 वर्ष की थी । वे औरैया, जनपद इटावा से कांग्रेस के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे, बड़े प्रखर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और राष्ट्र-भक्त थे तथा एक कुशल समाजसेवी थे । जनपद इटावा ने श्री बद्री प्रसाद पालीवाल के रूप में एक कुशल समाजसेवी और राजनेता खो दिया है आपसे प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, श्री मदन मोहन मिश्र जी का निधन जनपद रायबरेली में 20 जनवरी, 1994 को हो गया वे लगभग 78 वर्ष के थे । वे इस माननीय सदन के दो बार निर्वाचित सदस्य हुए थे । स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया था । कई बार वे जेल भी गए थे । वे एक समाज सेवी थे और विभिन्न पदों पर रहकर उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी थी । जनपद रायबरेली ने श्री मदन मोहन मिश्र के रूप में एक समाज सेवी और जनप्रिय नेता खो दिया है । आपसे प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, श्री कमरुद्दीन जी का निधन 26 जनवरी, 1994 को हो गया है । वे 91 वर्ष के थे । वे 1958 में बुढ़हना, जिला मुजफ्फरनगर से कांग्रेस के टिकट पर इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए । उनके रूप में मुजफ्फरनगर ने एक ऐसा व्यक्तित्व खो दिया है जो सही अर्थों में सर्व धर्म समभाव को मानते थे । वे एक अच्छे समाजसेवी थे । आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की शोक संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री महावीर सिंह राणा जी का निधन 2 फरवरी, 1994 को हो गया है । उनका निधन हृदय गति रुक जाने के कारण हुआ था । वे अभी कम ही उम्र के थे । उनकी उम्र 50 वर्ष की थी । वे दो बार इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । वे एक बार विधान परिषद् के सदस्य भी निर्वाचित हुए । उन्होंने प्रारम्भ से ही कांग्रेस के माध्यम से समाज सेवा की । उन्होंने विभिन्न पदों पर रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन किया । श्री महावीर सिंह राणा जी के निधन से जनपद सहारनपुर ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं अच्छा समाजसेवी खो दिया है । मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री गंगा स्वरूप भटनागर जी का निधन 8 फरवरी, 1994 को 11.00 बजे बेहटा, सीतापुर में हो गया है । वे 78 वर्ष के थे । वे दो बार इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए । वे कांग्रेस के एक कर्मठ कार्यकर्ता थे, अच्छे समाज सेवी थे । उनके निधन से सीतापुर जनपद ने एक अच्छा समाजसेवी और कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया । मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री शिव राम राय जी का निधन 11 फरवरी, 1994 को हो गया है । वे 93 वर्ष के थे । वे एक बार इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । वे एक बार लोक सभा के भी सदस्य निर्वाचित हुए । वे एक प्रखर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अनेक बार कारागार की यातनाएं सही हैं । उन्होंने विभिन्न पदों पर रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन किया । वे एक प्रखर व्यक्तित्व थे । मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की संवेदनाएं उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री मोहम्मद रफी खां जी का निधन 17 फरवरी, 1994 को मेडिकल कालेज में हो गया । इनकी उम्र अधिक नहीं थी । वे 58 वर्ष के थे । वे कितने लोकप्रिय

थी इस बात का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वे इस सम्मानित सदन के चार बार सदस्य निर्वाचित हुए । अपने क्षेत्र में उनके व्यक्तित्व की छाप थी । उन्होंने निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा की उनके निधन से शाहजहांपुर जनपद ने एक अच्छा समाज सेवी और एक कुशल राजनीतिक खो दिया है । मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरे और मेरे दल की संवेदनायें उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, आज प्रातःकाल मुझे एक पत्र दिया गया जिसमें श्री मुजफ्फर हसन जी के दुःखद निधन का समाचार प्राप्त हुआ । इनका निधन 21 फरवरी, 1994 को लखनऊ में हुआ । वे लगभग 92 वर्ष के थे । वे इतने जनप्रिय थे कि इस सम्माननीय सदन के पांच बार सदस्य निर्वाचित हुए । श्री मुजफ्फर हसन साहब ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया । उन्होंने अनेकों बार विभिन्न पदों पर और मंत्रि परिषद् में रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन किया । वे आजीवन अपने सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहे । उनके निधन से इलाहाबाद जनपद ने एक अच्छा कुशल राजनीतिक, निःस्वार्थ समाज सेवी और महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया है । मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी तथा मेरे दल की संवेदनाएं उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री प्रभाव तिवारी–

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज अत्यन्त शोकाकुल वातावरण में हम लोग अपने उन 12 सहयोगियों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं, जिन्होंने अपने कार्यकाल में अतनें कर्तव्य निर्वहन में सम्पूर्ण निष्ठा और गरिमा बनाये रखकर इस सदन की कार्यवाही में हिस्सा ही नहीं लिया, बल्कि समाज सेवा के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में और उनमें से बहुतों ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में भी राष्ट्र की अपरिमित सेवा की है । श्रीमन् सबसे दुःखद तो यह है कि इसमें से कुछ ऐसे हमारे साथी भी हैं, जो बहुत ही कम आयु में हमारे बीच से चले गए हैं ।

मान्यवर, श्रीमती विमला सिंह 1985 से 1989 तक सदस्य के रूप में गाजियाबाद का प्रतिनिधित्व करती रहीं । उनका सम्पूर्ण जीवन महिला उत्थान के लिये समर्पित रहा । उन्होंने विशेष रूप से दहेज उन्मूलन, हरिजनों और दलित वर्ग के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए तथा खासतौर से अम्बेडकर विद्यालय की स्थापना में अपना अपरिमित सहयोग दिया, उसके लिये वह सदैव याद की जाती रहेंगी, उनका बहुत ही कम आयु में निधन हो गया । मान्यवर, मोहम्मद शमीम अन्सारी जनता पार्टी के टिकट पर नवाबगंज, जिला बाराबंकी से निर्वाचित हुये थे । उनके निधन से जनपद बाराबंकी ने एक कुशल समाजसेवी को खो दिया । श्री गणेश चन्द्र काछी जी ने 1952, 1957 तथा 1962 में 3 बार इस सम्मानित सदन की कांग्रेस पार्टी के सदस्य के रूप में सेवा की और राष्ट्रीय आन्दोलन के सिलसिले में 3 बार जेल जाकर भारत माता को आजाद कराने के लिये ब्रिटिश शासनकाल में नजरबंद भी रहे । उनके निधन से जनपद मैनपुरी ने एक महान स्वतंत्रता सेनानी तथा कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मान्यवर, सरदार तेजा सिंह के निधन से जनपद गाजियाबाद ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी को खो दिया, वह एक आदर्श अध्यापक भी थे । श्री बद्री प्रसाद पालीवाल के निधन से जनपद इटावा ने एक कुशल राजनीतिज्ञ, एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा समाज सेवी को खो दिया । वह 1962 के सामान्य निर्वाचन में कांग्रेस के टिकट पर इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे, उनके निधन से प्रदेश ने समाजसेवी विचारधारा से ओतप्रोत सपूत को खो दिया । मान्यवर, पं0 मदन मोहन मिश्र जी, जिनका हाल में 20 जनवरी को निधन हुआ । जिस दिन उनका निधन हुआ, उस दिन भी उन्हें स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की एक ऐसी बैठक की अध्यक्षता करनी थी, जहां वह हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राष्ट्र के लिये अपने योगदान को और आगे बढ़ा सकें, उनके निधन से जनपद रायबरेली ने एक महान स्वतंत्रता सेनानी, कुशल पत्रकार, सम्पादक को खो दिया । उन्होंने साप्ताहिक "जनता राज" के प्रकाशक, सम्पादक के रूप में रायबरेली के समीपवर्ती जनपदों की सेवा की थी, उनके निधन से हमारे बीच से एक कुशल राजनीतिज्ञ, समाजसेवी खो गया । श्री कमरुद्दीन, मुजफ्फरनगर के रूप में इस प्रदेश ने एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी को खो दिया, वह जिला परिषद् के लम्बे अरसे तक सदस्य भी रहे । मान्यवर, इसी प्रकार श्री महावीर सिंह राणा जी 1980 से 1991 तक लगातार कभी विधान सभा और कभी विधान परिषद् के सदस्य के रूप में हम लोगों के साथ, मित्र के रूप में, परिवार के सदस्य के रूप में रहे । श्री महावीर सिंह राणा एक अच्छे दोस्त, एक साफदिल इन्सान थे, वह अपनी सच्ची बात को कहने में कभी संकोच नहीं करते थे, उनके निधन से जहां जनपद सहारनपुर ने एक कुशल राजनीतिज्ञ, समाजसेवी को खोया है, वहीं हमारे दल ने एक सच्चा हमदर्द भी खो दिया उनके निधन से हम सभी लोग बहुत दुःखी हैं । मान्यवर, गंगा प्रसाद भटनागर जी का निधन 78 वर्ष की आयु में ही हो गया । उनके निधन से सीतापुर ने एक कुशल राजनीतिज्ञ खो दिया है । श्री गंगा प्रसाद भटनागर जी उन समाज सेवियों में से थे जिन्होंने प्रधान से लेकर ब्लाक प्रमुख, जिला परिषद् सदस्य और विधायक के रूप में सेवायें की । श्री शिव राम राय जी के निधन से एक महान स्वतंत्रता सेनानी का अन्त हुआ है । उनके निधन के साथ-साथ हरिजनों एवं कमजोर तबके के लिये कार्य करने वाले तथा कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े एक समर्पित योद्धा का अन्त हुआ है । मान्यवर, मोहम्मद रफी खां, जी के निधन से शाहजहांपुर ने 1962, 67, 74 और 77 में जनपद का प्रतिनिधित्व करने वाले एक सच्चे प्रतिनिधि को खोया है।

मान्यवर, मुजफ्फर हसन जी का नाम आता है तो एक ऐसे विशालकाय व्यक्तित्व, एक ऐसे धर्म निरपेक्ष व्यक्ति के व्यक्तित्व का दृश्य सामने आता है जिनका आजादी के पहले का सम्पूर्ण जीवन देश को आजाद कराने के लिये समर्पित रहा और उसके बाद 1952 से मंत्रि मण्डल के सदस्य रहे । वह जहां भी रहे, उन्होंने अपनी कार्य कुशलता की छाप छोड़ी है । यद्यपि वह लखनऊ में रहने लगे थे लेकिन उन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री के समय में भी इलाहाबाद की राजनीति को प्रभावित किया है । मान्यवर, वह एक कुशल राजनीतिज्ञ थे । मान्यवर, जो शोक संवेदना माननीय नेता सदन श्री मुलायम सिंह यादव जी ने, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री कल्याण सिंह जी ने

व्यक्त किया है, उससे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करते हुए मान्यवर, आपसे आग्रह करूंगा कि मेरे दल की संवेदनायें इन परिवारों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री किरन पाल सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, इस विधान सभा के जिन भूतपूर्व सदस्यों के निधन का जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और माननीय नेता कांग्रेस ने व्यक्त किये हैं, मैं और मेरा दल उनसे अपने को सम्बद्ध करते हैं । मान्यवर, जिन भूतपूर्व सदस्यों के निधन के बारे में यह सदन शोक व्यक्त कर रहा है, उनमें से कुछ सदस्य ऐसे हैं जो कम आयु में ही हमारे बीच से उठ गये हैं और बहुत से भूतपूर्व सदस्य ऐसे थे जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, अनेक बार जेल गये और कुछ माननीय सदस्य ऐसे हैं जिनकी जीवनी पढ़कर हम शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं । मान्यवर, श्रीमती विमला सिंह जी हमारे जनपद बुलन्दशहर में ही जन्मी थीं और उनका विवाह भी जनपद बुलन्दशहर के एक नवयुवक से हुआ था बाद में इनके पति आई0ए0एस0 हो गये । अपने गृहस्थ जीवन का सफलतापूर्वक निर्वाह करते हुए भी श्रीमती विमला सिंह जी ने सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षिक कार्यों में पूर्ण रूप से रुचि ली और वह गाजियाबाद में पहली बार 1985 में मोदीनगर से इस विधान सभा की सदस्या चुनी गयी । मान्यवर, वह सरलता और सज्जनता की प्रतिमूर्ति थी । 1985 में मैं भी इस सदन में था वह भी थीं । इनके इतने कम उम्र में उठ जाने से मैं और मेरा दल बहुत दुःखी है । मैं आपसे निवेदन करता हूं कि मेरा और मेरे दल का शोकोद्गार श्रीमती विमला सिंह जी के परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, मोहम्मद शमीम अन्सारी का निधन 29 अक्टूबर, 1993 को बाराबंकी में हो गया, वे 66 वर्ष के थे । जैसा माननीय नेता सदन ने कहा कि वह चौधरी चरण सिंह जी की प्रेरणा पर राजनीति में आये और वे चौधरी चरण सिंह का जो मार्ग दर्शन था उसी पर चलकर उन्होंने समाज की सेवा की । मैं आपसे निवेदन करता हूं कि उनके परिवार तक मेरा और मेरे दल का शोकोद्गार पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री गणेश चन्द्र काछी जी का निधन 12 नवम्बर, 1993 को दिल्ली में हुआ । वह 81 वर्ष के थे । मैनपुरी जनपद के रहने वाले थे । 1952 में पहली बार विधान सभा में निर्वाचित होकर आये थे । 1957 व 1962 दो बार इस आदरणीय सदन के सदस्य रहे । वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे स्वतंत्रता के आन्दोलनों में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया और कई बार जेल गये । उनके निधन पर मेरा दल शोक व्यक्त करता है । आपसे निवेदन है कि मेरे और मेरे दल के शोकोद्गार उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

सरदार तेजा सिंह जी का निधन 29 दिसम्बर, 1993 को हुआ । वह लगभग 90 वर्ष के थे । उनका जन्म सरगोधा (पश्चिम पाकिस्तान) में हुआ था । निर्वाचन क्षेत्र गाजियाबाद, जिला मेरठ से चुनकर विधान सभा के सदस्य रहे । वह एक अच्छे समाज सेवी थे । उनकी उज्ज्वल छवि थी, बड़े लोक प्रिय थे । उनके निधन पर मेरा दल दुःख व्यक्त करता है और आपसे निवेदन है कि मेरे और मेरे दल की ओर से शोक संवेदना के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री बद्री प्रसाद पालीवाल जी का निधन 15 दिसम्बर, 1993 को हो गया, वह लगभग 85 वर्ष के थे । वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । जनपद इटावा के औरैया निर्वाचन क्षेत्र से वह चुनकर आये थे । उनके निधन से हमको दुख है । आपसे निवेदन है कि हमारे दल के शोक संवेदना के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री मदन मोहन मिश्र जी का निधन 20 जनवरी, 1994 को रायबरेली में हो गया । वह 78 वर्ष के थे । वह एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । उन्होंने स्वतंत्रता के आन्दोलनों में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया । जनपदीय स्तर पर अनेक रूपों में और अनेक पदों पर उन्होंने सेवा की । मेरा दल इनके निधन से दुखी है । आपसे निवेदन है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से संवेदना के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री कमरुद्दीन का निधन 26 जनवरी, 1994 को हो गया । वह 91 वर्ष के थे । इनका जन्म ग्राम गढ़ी दौलत, जनपद मुजफ्फरनगर में हुआ था । वह बड़े लोकप्रिय व्यक्ति थे । मुजफ्फरनगर में उनकी बड़ी ख्याति, प्रतिष्ठा व इज्जत थी । उनके निधन से हमारे दल को बड़ा दुख है । आपसे निवेदन है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से संवेदना के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री महावीर सिंह राणा जी का निधन 2 फरवरी, 1994 को हरिद्वार में हृदय-गति रुक जाने से हो गया । वह 50 वर्ष के थे । मेरा भी उनसे अच्छा रिश्ता था, अच्छे मित्र थे । मेरे साथ भी वह इस सदन में रहे । 1980 में विधान परिषद् के सदस्य रहे । बहुत अच्छे व्यक्ति थे, मिलनसार व्यक्ति थे । अपने कर्तव्यों के प्रति व अपने क्षेत्र की समस्याओं के प्रति हमेशा जागरुक रहे । ऐसे होनहार राजनीतिज्ञ के इतनी कम उम्र में निधन हो जाने से हम सब दुखी हैं । दुख की इस घड़ी में आपसे निवेदन है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से शोक संवेदना के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री गंगा स्वरूप भटनागर का निधन 8 फरवरी, 1994 को रात्रि 11.00 बजे बेहटा, जिला सीतापुर में हो गया । वह इस सदन के सदस्य रहे । उनके निधन से हमें दुःख है । आपसे निवेदन है कि शोक के ये भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, श्री शिवराम राय का निधन 11 फरवरी, 1994 को हो गया । वे लगभग 93 वर्ष के थे । उन्होंने स्वतंत्रता के आन्दोलनों में बढ़ चढ़कर भाग लिया । वह कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे, जिला परिषद् में भी रहे, पी0सी0डी0एफ0 में भी रहे । अनेक पदों पर रहकर उन्होंने सेवायें की । मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से शोक संवेदना के भाव उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, मोहम्मद रफी खां का निधन 17 फरवरी, 1994 को लखनऊ मेडिकल कालेज में हो गया वे 58 वर्ष के थे । उनकी भी आयु बहुत कम थी उनका जन्म शाहजहांपुर में हुआ । मैं निवेदन करूंगा उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारे और हमारे दल की संवेदना पहुंचाने का कष्ट करें ।

मान्यवर, जैसा कल ही, श्री मुजफ्फर हसन जी का निधन हो गया । उनकी आयु 92 वर्ष की थी । उनके निधन से हम सब दुखी हैं । मैंने उनका बहुत नाम सुन रखा है, नजदीक से उनसे परिचय नहीं रहा लेकिन उनके व्यक्तित्व की जितनी तारीफ की जाय वह कम है । उनकी लोकप्रियता यही है कि वे छः बार विधान सभा के सदस्य रहे । स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने बढ़-बढ़कर भाग लिया और अनेक बार जेल गए । उन्होंने इस प्रदेश की राज्य मंत्री और मंत्री के रूप में सेवा की और वे आजीवन साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए काम करते रहे । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि ऐसे महान व्यक्तित्व के उठ जाने से मैं और मेरा दल बहुत दुखी है । आपसे निवेदन है कि श्री मुजफ्फर हसन जी के शोक संतप्त परिवार तक मेरी व मेरे दल की शोक संवेदनाएं पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री उदल–

मान्यवर, जिन 12 माननीय भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर जो उद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त किए हैं मैं और मेरा दल उनसे अपने को सम्बद्ध करता है ।

मान्यवर, श्रीमती विमला सिंह का निधन 12 अप्रैल, 1993 को हो गया । उनकी उम्र सिर्फ 51 वर्ष की थी । उनके बारे में जो लिखा और बताया गया है उससे विदित है कि वे बहुत ही कर्मठ समाज सेविका और राजनीतिक कार्यकर्ता थीं । उनका सम्बन्ध कांग्रेस पार्टी से रहा । उन्होंने गाजियाबाद में बहुत सी सामाजिक संस्थाओं में कार्य किया । उनके निधन से गाजियाबाद को बड़ा नुकसान हुआ और हमारे बीच से एक समाज सेविका उठ गयीं । मान्यवर, उनके निधन पर मैं और मेरा दल बहुत दुखी है । मैं आपसे निवेदन करूंगा कि मेरी और मेरे दल की ओर से शोक संतप्त परिवार तक संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

मान्यवर, स्वर्गीय मोहम्मद शमीम अन्सारी का निधन 29 अक्टूबर, 1993 को बाराबंकी में हो गया । यह 66 वर्ष के थे और इस माननीय सदन के 1977 में सदस्य रहे । उनका चौधरी चरण सिंह जी से निकट का संबंध रहा और उनकी विचारधारा को मानते थे और उनकी कृपा से ही उन्होंने राजनीति में पदार्पण किया । उनके कम उम्र में निधन से एक समाज सेवी हमारे बीच से उठ गया जिससे बाराबंकी जनपद को बहुत कमी हो गयी । इसलिए मैं और मेरा दल बहुत दुखी है और आपसे प्रार्थना है कि उनके शोक संतप्त परिवार तक शोक संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

इस माननीय सदन के भूतपूर्व माननीय सदस्य श्री गणेश चन्द्र कांछी का निधन 12 नवम्बर, 1993 को हो गया । वे 81 वर्ष के थे । स्व0 कांछी जी के साथ इस सदन में 10 वर्ष तक मुझे काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । स्व0 गणेश चन्द्र काछी एक प्रखर व्यक्तित्व के व्यक्ति थे और बहुत अच्छे-अच्छे प्रश्न यहां करते थे जिनको सुनकर लोग दंग रह जाते थे । उनका स्वतंत्रता संग्राम में और समाज सेवा में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा । वे कुशल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे । उनके हमारे बीच से उठ जाने से मैं समझता हूं कि मैनपुरी को बहुत हानि हुई । मैं और मेरा दल उनके निधन पर शोक व्यक्त करता है और आपसे निवेदन है कि हमारी संवेदना उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

इसी तरह से सरदार तेजा सिंह जी का निधन 29 दिसम्बर, 1993 को हो गया । सरदार तेजा सिंह जी का जन्म वर्ष 1903 में सरगोधा, पाकिस्तान में हुआ था । वे वर्ष 1952 में इस माननीय विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । तत्पश्चात् वे वर्ष 1957 में और 1962 में भी निर्वाचन क्षेत्र गाजियाबाद, जिला मेरठ से कांग्रेस पार्टी के टिकट पर विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए थे ।

मान्यवर, इनके साथ मुझे 10 वर्षों तक रहने का मौका मिला है । इनके निधन से गाजियाबाद में बहुत बड़ी क्षति हुई है । एक समाजसेवी हमारे बीच से उठ गया । इसलिए मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से शोक प्रकट करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि इनके परिवार तक हमारे दल की ओर से संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

श्रीमन् बद्री प्रसाद पालीवाल जी का निधन 25 दिसम्बर, 1993 को हुआ था । वे लगभग 85 वर्ष के थे । इनके साथ भी मुझे यहां रहने का मौका मिला । मान्यवर, ये भी प्रमुख वक्ता थे और बहुत ही मिलनसार थे वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । इनके उठ जाने जाने से मैं समझता हूं कि आज इटावा जनपद की बहुत बड़ी क्षति हुई है और इसके साथ ही कांग्रेस पार्टी की भी क्षति हुई है । इसलिये मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आप हमारे दल की शोक संवेदना इनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्रीमन्, स्वर्गीय मदन मोहन मिश्रा जी का निधन 20 जनवरी, 1994 को रायबरेली में हो गया । वे लगभग 78 वर्ष के थे । वर्ष 1967 में इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए थे और 1969 में भी पुनः निर्वाचित हुए थे । वह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे । इन्होंने रायबरेली जिले में कई संस्थाओं की सेवा की और भारत सेवक समाज के अध्यक्ष रहे । सहकारी संघ की भी इन्होंने सेवा की । इनके उठ जाने से आज रायबरेली में जो जगह रिक्त हुई है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती है । इसलिये मैं आपसे निवेदन करूंगा कि हमारी तरफ से और हमारे दल की तरफ से शोक संवेदना इनके परिवार तक आप पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री कमरुद्दीन का निधन दिनांक 26 जनवरी, 1994 को हो गया । वे लगभग 91 वर्ष के थे । वे जनपद मुजफ्फरनगर के क्षेत्र बुढ़ाना से कांग्रेस पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे । वे सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता थे और जिला परिषद् के सदस्य रह चुके थे । वे अत्यन्त ही मृदुभाषी और लोगों के साथ मेल-मिलाप रखने वाले व्यक्ति थे । इनके उठ जाने से आज मुजफ्फरनगर में जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति संभव नहीं है । इसलिये मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप हमारी ओर से और हमारे दल की ओर से शोक संवेदना उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

महावीर सिंह राणा जी का निधन 2 फरवरी, 1994 को हृदय गति रुक जाने से हो गया । बहुत ही कम उम्र में यानी 50 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ । वह सन् 85 के सामान्य निर्वाचन में हरिद्वार से इस विधान सभा में कांग्रेस के टिकट

पर निर्वाचित हुए थे । पुनः सन् 89 में निर्वाचित हुए । वह बहुत अच्छे राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे । उनके निधन से बहुत बड़ी क्षति कांग्रेस पार्टी को भी हुई और उनके जिले में जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती । इसलिए मैं और मेरा दल उनके निधन से बहुत दुःखी है । श्रीमन्, आपसे निवेदन है कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

गंगा स्वरूप भटनागर जी का निधन 8 फरवरी, 1994 को हो गया । यह सीतापुर के निवासी थे । इनकी उम्र लगभग 78 वर्ष की थी । श्रीमन्, यह वर्ष 67 के सामान्य निर्वाचन में इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे और सन् 74 व 85 में भी इस विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । इस कर्मठ और समर्पित कांग्रेस के नेता का जो निधन हो गया उसकी राजनीतिक जीवन में और सामाजिक जीवन में कमी हमेशा बनी रहेगी और सीतापुर जनपद का खासकर बहुत नुकसान हो गया । इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक आप मेरी और मेरे दल की ओर से शोक संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

शिवराम राय जी का 11 फरवरी, 1994 को निधन हुआ । वह 93 वर्ष के थे । यह इस विधान सभा के भी सदस्य रहे, विधान परिषद् के भी रहे और लोक सभा के भी सदस्य रहे । स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी आप थे और साथ ही बहुत ही मृदुभाषी और मिलनसार व्यक्ति थे । यह समाजवादी विचारधारा के व्यक्ति थे । मैं समझता हूं कि इनके निधन से आजमगढ़ में जनता को और समाजवादी विचारधारा को काफी क्षति पहुंची है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती है, खासकर आजमगढ़ जिले को बहुत बड़ी क्षति हुई है । आज भी उनसे लोग राय-मशविरा लेते रहते थे । इसलिए मेरा दल और मैं शिवराम राय जी के निधन पर काफी दुःखी है और मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी ओर से और हमारे दल की ओर से संवेदना भेजने की कृपा करें ।

श्रीमन्, मोहम्मद रफी खां साहब, इनका निधन 17 फरवरी, 1994 को लखनऊ के मेडिकल कालेज में हो गया । इनकी भी उम्र अभी 58 वर्ष की ही थी, बहुत ही कम थी । यह सन् 62 के सामान्य निर्वाचन में कांग्रेस के टिकट पर शाहजहांपुर से चुन कर इस सम्मानित विधान सभा के सदस्य रहे, और फिर तीन बार इस विधान सभा के सदस्य हुए । यह बहुत ही अच्छे वक्ता, योग्य और मिलनसार व्यक्ति थे । बड़े मृदुभाषी भी थे । इनके साथ भी मुझे रहने का मौका मिला है । मैं समझता हूं कि उनकी मृत्यु से बहुत बड़ी क्षति सार्वजनिक जीवन में, राजनीतिक जीवन में और सामाजिक जीवन में हो गई है । इनके निधन पर मैं और मेरा दल काफी दुःखी है । आपसे निवेदन है कि इनके शोक संतप्त परिवार तक मेरी संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

मुजफ्फर हसन साहब का निधन अभी कल ही 21 फरवरी, 1994 को हो गया । यह लगभग 92 वर्ष के थे । श्रीमन्, वह बहुत बड़े स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, और देश की एकता, अखण्डता और सामाजिक सौहार्द के वह प्रतीक थे । इस माननीय विधान सभा में रह कर और इसके उच्च पदों पर और सरकार में भी रहकर उन्होंने इस इस प्रदेश की बहुत बड़ी सेवा की है और बहुत ही मिलनसार और मृदुभाषी थे ।

उनके निकट जो लोग गए होंगे उन्हें जरूर इस बात का अहसास होगा कि उनका स्वभाव और व्यवहार किस तरह का था । मेरा भी उनसे निकट का संबंध रहा है । उनके निधन से हमारा दल बहुत दुःखी है । श्रीमन्, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से शोक संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार को भिजवाने की कृपा करें । प्रदेश की बहुत बड़ी सेवा की है ।

*श्री राम स्वरूप–

माननीय सदस्यों के देहावसान पर दुःख प्रकट करते हुए और नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं से सम्बद्ध करते हुए दुःख प्रकट करता हूं । श्रीमती विमला सिंह का निधन 12 अप्रैल, 1993 को हो गया । वह लगभग 51 वर्ष की थीं । इनके निधन पर मुझे बहुत ही दुःख है । इतनी कम उम्र में एक महिला का देहावसान हुआ जिन्हों महिलाओं के लिए, समाज के लिए हर तरह के कार्य किए । आज उनका होना समाज के लिए आवश्यक था । उनके देहावसान से बहुत बड़ी क्षति हुई है । मैं दुःख प्रकट करते हुए आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी व मेरे दल की ओर से शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक भिजवाने की कृपा करें । मोहम्मद शमीम अन्सारी के निधन पर बहुत दुःख प्रकट करता हूं उन्होंने अपने समय में समाज की जो सेवा की उससे यही लगता है कि वह समाज के प्रति समर्पित रहे । इस सदन में जो उन्होंने कार्य किए उनके लिये मैं आभार व्यक्त करते हुए दुःख प्रकट करता हूं कि वह हमारे बीच से चले गये । मैं आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी व मेरे दल की ओर से शोक संवेदनाएं उनके परिवार तक भिजवाने का कष्ट करें । श्री गणेश चन्द्र काछी के निधन से मैं बहुत दुःखी हूं । श्री काछी ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बहुत बढ़ चढ़कर काम किया था उन्होंने उस समय जनता के लिए देश के लिए आन्दोलन में भाग लिया । इनसे मेरी निजी जानकारी थी इसलिए मैं इनके निधन पर दुःखी हूं और अपने तथा अपने दल की ओर से आपसे आग्रह करता हूं कि उनके परिवार तक हमारी शोक संवेदनाएं भेजने की कृपा करें । सरदार तेजा सिंह, जो 90 वर्ष के थे । इन्होंने अपने समय में जनता की सेवा की । यह आदर्श के पात्र हैं । इनके निधन से मैं बहुत दुःखी हूं । वे हाकी, वालीबाल खेलों में भी विशेष रुचि रखते थे ।

(समय 12 बजकर 5 मिनट)

मैं आपसे आग्रह करता हूं कि उनके परिवार तक आप मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें भिजवाने का कष्ट करें ।

श्री बद्री प्रसाद पालीवाल का निधन 25 दिसम्बर, 1993 को हो गया वह लगभग 85 वर्ष के थे । उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाई । वह जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री तथा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी रह चुके थे । व सहकारी बैंक, इटावा के संचालक तथा जिला बोर्ड के सदस्य भी रह चुके थे । पालीवाल जी के निधन से जनपद इटावा ने एक स्वतंत्रता सेनानी कुशल राजनीतिज्ञ तथा समाजसेवी खो दिया है । उनके देहान्त से मैं बहुत दुःखी हूं । आप मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके परिवार तक भिजवाने का कष्ट करें ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री मदन मोहन मिश्र जी का निधन 20 जनवरी, 1994 को हो गया । श्री मदन मोहन मिश्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ चढ़कर भाग लिया था । यह जिला सहकारी संघ के डायरेक्टर, नवीन राजकीय प्रेस वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके थे । मदन मोहन मिश्र जी राष्ट्रीय आन्दोलन के सिपाही थे। मैं उनके निधन से दु:खी हूं आप मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री कमरुद्दीन का निधन 26 जनवरी, 1994 को हो गया । श्री कमरुद्दीन सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यकर्ता थे । मेरा आपसे आग्रह है कि आप उनके परिवार तक मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनायें भिजवाने का कष्ट करें ।

श्री महावीर सिंह राणा जी का निधन 2 फरवरी 1994 को हृदयगति रुक जाने के कारण हरिद्वार में हो गया । राणा जी ने छात्र जीवन से ही राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया था । उन्होंने कांग्रेस के लिए बहुत काम किया । सहारनपुर जिले में होने की वजह से मेरी इनसे जान पहचान थी वह बड़े उत्साही थे । वह जनता से जुड़े हुए थे । उनके देहान्त से हम बहुत दु:खी हैं । आप हमारी ओर से तथा हमारे दल की ओर से उनके परिवार तक शोक संवेदनाएं भिजवाने की कृपा करें ।

श्री गंगा स्वरूप भटनागर कांग्रेस पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता थे । आप उनके परिवार तक मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनायें भिजवाने की कृपा करें ।

श्री शिवराम राय के निधन से मैं बहुत दु:खी हूं उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया । कई बार जेल गए थे । आप उनके परिवार तक मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनायें भिजवाने का कष्ट करें ।

मोहम्मद रफी खां ने छात्र जीवन से ही राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया था । वह बड़े उत्साही थे । उनके निधन से हम बहुत दु:खी हैं । आप उनके परिवार तक मेरी तथा मेरे परिवार की शोक संवेदनायें भिजवाने की कृपा करें ।

श्री मुजफ्फर हसन एक ऐतिहासिक व्यक्ति थे । जिन्हें मैं अच्छी तरह से जानता था । उनके देहान्त से मुझे बड़ा दु:ख है । आजादी के समय उन्होंने धर्म निरपेक्षता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए काफी योगदान दिया था । जो उन्होंने लड़ाई लड़ी वह ऐतिहासिक लड़ाई थी और इलाहाबाद जैसे नगर में वह इतने विख्यात और लोकप्रिय थे कि सारे लोग उन्हें बहुत ही प्यार करते थे इसलिए उनके देहान्त से मैं बहुत दु:खी हूं और अपनी ओर से और अपने दल की ओर से यह अपील करता हूं कि उनके परिवार तक शोक संवेदना भेजने की आप व्यवस्था करेंगे । मैं इन सभी सदस्यों की मौत से दु:खी हूं और इनके परिवारों के प्रति शोक प्रकट करते हुए आपके द्वारा उनके परिवारों तक शोक संवेदना भेजने की व्यवस्था के लिए अपील करता हूं ।

प्रख्यात नर्तक श्री गोपी कृष्ण के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करने की मांग

श्री श्याम देव राय–

मान्यवर, मैं आपके संज्ञान में एक बात लाना चाहता हूं कि अभी एक सप्ताह पूर्व प्रख्यात नर्तक पद्म श्री नटराज श्री गोपी कृष्ण का निधन हो गया है और सदन उनके नाम का शोक प्रस्ताव नहीं पास कर रहा है और सदन यह भूल कर रहा है। मान्यवर, वह इस देश में ही नहीं सारे विश्व में प्रसिद्ध थे।

श्री अध्यक्ष–

आप बीच में मत बोलें अभी यह प्रकरण चल रहा है। दूसरे अभी उनके जीवन के संबंध में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हुई है जिन लोगों के जीवन से संबंधित जानकारी सदन को प्राप्त हो जाती है उन्हीं के संबंध में सदन में शोक प्रस्ताव पास किए जाते हैं। उनके संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त होने के बाद ही उनका शोक प्रस्ताव लाया जा सकता है।

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्रीमती विमला सिंह, श्री मोहम्मद शमीम अंसारी, श्री गणेश चन्द्र काछी, सरदार तेजा सिंह, श्री बद्री प्रसाद पालीवाल, श्री मदन मोहन मिश्र, श्री कमरुद्दीन, श्री महाबीर सिंह राणा, श्री गंगा स्वरूप भटनागर, श्री शिवराम राय, श्री मोहम्मद रफी खां तथा श्री मुजफ्फर हसन के निधन पर शोकोद्गार (क्रमागत)

श्री महबूब अली–

मान्यवर, आज निधन की शोक संवेदना के बारे में जैसा कि माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता जनता दल, माननीय नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, माननीय नेता कम्युनिस्ट (मार्क्सवादी पार्टी) आदि नेताओं ने जो शोकाकुल विचार रखे हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। स्व0 श्रीमती विमला सिंह, स्व0 मोहम्मद शमीम अंसारी, श्री गणेश चन्द्र काछी, स्व0 श्री सरदार तेजा सिंह, स्व0 श्री बद्री प्रसाद पालीवाल, स्व0 श्री मदन मोहन मिश्र, स्व0 श्री कमरुद्दीन, स्व0 श्री महाबीर सिंह राणा, स्व0 श्री गंगा स्वरूप भटनागर, स्व0 श्री राम शिव राम राय, स्व0 श्री मोहम्मद रफी खां, स्व0 श्री मुजफ्फर हसन इन महान आत्माओं के प्रति जो कि इन सदन के पूर्व सदस्य थे मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से आपसे निवेदन करता हूं कि इनके शोकाकुल परिवारों के प्रति शोकोद्गार पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री काशी सिंह एरी–

मान्यवर, इस माननीय सदन को और उत्तर प्रदेश की जनता की सेवा करने वाले 12 सम्मानित सदस्य आज हमारे बीच में नहीं रहे, यह पूरे प्रदेश के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है। इसमें से कुछ सम्मानित सदस्य ज्यादातर पुरानी पीढ़ी के थे और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे थे जिनसे अभी हमको प्रेरणा लेनी थी लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि वह हमारे बीच में नहीं रहे। इसी तरह से कुछ सम्मानित सदस्य जो नयी पीढ़ी के थे वह भी हमारे बीच में नहीं रहे। उनसे हमें और प्रदेश को और प्रदेश की जनता को बहुत ज्यादा उम्मीदें थीं लेकिन यह नियति है कि वह हमारे बीच में नहीं रहे। मान्यवर, श्रीमती विमला सिंह का निधन 12 अप्रैल, 93 को हो गया वह 51 वर्ष की थीं। इसी तरह से मोहम्मद शमीम अंसारी जी का निधन 29 अक्तूबर, 93 को बाराबंकी में हो गया वह 66 वर्ष के थे। मान्यवर,

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

माननीय गणेश चन्द्र कांछी जी का निधन 12 नवम्बर, 1993 को हो गया । वह 81 वर्ष के थे । श्री तेजा सिंह जी का निधन 29 नवम्बर, 93 को हो गया । वह लगभग 90 वर्ष के थे । स्व0 श्री बद्री प्रसाद पालीवाल का निधन 15 दिसम्बर, 93 को हो गया वह 83 वर्ष के थे । इसी तरह से माननीय मदन मोहन मिश्र जी का निधन 20 जनवरी, 94 को रायबरेली में हो गया । उनकी उम्र 78 वर्ष की थी । श्री कमरुद्दीन जी का निधन 26-1-94 को हो गया, वह लगभग 91 वर्ष के थे । स्वर्गीय भाई महावीर सिंह राणा जी का निधन 2 फरवरी, 1994 को हृदय गति रुकने से हो गया वह 50 वर्ष के थे । स्वर्गीय गंगा स्वरूप भटनागर जी का निधन 8 फरवरी, 94 को जिला सीतापुर में हो गया । वे 78 वर्ष के थे । श्री शिवराम राय जी का निधन 11 फरवरी, 94 को हो गया वे 93 वर्ष के थे । भाई मोहम्मद रफी खां का निधन 17 फरवरी, 94 को मेडिकल कालेज, लखनऊ में हो गया वह 58 वर्ष के थे । हमारे सम्मानित भूतपूर्व सदस्य श्री मुजफ्फर हसन जी का निधन 21 फरवरी को लखनऊ में हो गया वे लगभग 92 वर्ष के थे ।

मान्यवर, जैसा मैंने कहा इन महानुभावों के निधन से सम्मानित सदन और इस प्रदेश की अपूर्णनीय क्षति हुई है । इन स्वर्गीय सदस्यों में से 2 सम्मानित सदस्य के सम्पर्क में आने का मुझे सौभाग्य मिला है । पहली श्रीमती विमला सिंह, जो मेरे साथ 85 में यहां चुनकर आयी थीं । वह काफी प्रखर महिला थीं और खासतौर से उनका जो काम था वह महिलाओं के उत्थान से संबंधित था । उन्होंने वार विडोज, महिलाओं, सैनिक विधवाओं के कल्याण के लिए बहुत काम किया । वह विभिन्न महिला संगठनों और शिक्षा संस्थाओं से जुड़ी रहीं । मुझे एक स्मृति है कि वह 89 के चुनाव में इत्तफाक से नहीं आ पायीं थीं । यहां उनका जो निवास था, पुराना विधायक निवास, ओ0सी0आर0 वह मुझको आवंटित हुआ था । बहुत सारे लोगों ने मुझसे कहा कि कमरा जल्दी खाली करा लो लेकिन मैंने उन लोगों को समझाया । उन्हें कुछ घरेलू परेशानी थी जिसकी वजह से 6 महीने तक वह उस मकान में रहीं और जब उन्होंने खाली किया तब मैं उसमें गया । जब तक वह रहीं उन्होंने समाज की सेवा की और विशेषकर महिलाओं के उत्थान के लिये उन्होंने बहुत कार्य किया ।

महिलाओं के लिए उन्होंने जो काम किया वह अविस्मरणीय है । और मैं आशा करता हूं कि उनकी प्रेरणा से हम सब लोग काम करेंगे, खासतौर से जो हमारी महिला सदस्या हैं, और जो कमजोर वर्ग की महिलायें हैं, उनकी प्रेरणा और उनके विचारों के अनुरूप काम करेंगी, तो उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी । भाई राणा जी दो बार इस सम्मानित सदन के सदस्य रहे हैं । वह बड़े उदार और उच्च विचार के रहे हैं । हमारा काफी विचार-विमर्श उनसे होता रहा है । उनकी पार्टी से हट कर उनसे राय होती थी । वह आज हमारे बीच में नहीं हैं । ऐसे व्यक्तित्व से, ऐसे लोगों से समाज सीखता है, समाज को फायदा मिलता है । तो इन सभी सम्मानित सदस्यों के प्रति हमारे माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और अन्य दलों के सम्मानित नेताओं ने जो शोकोद्गार व्यक्त किया है, उससे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि हमारा शोकोद्गार उनके दुःखी परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता कांग्रेस पार्टी श्री प्रमोद जी तिवारी, माननीय नेता जनता दल, माननीय किरनपाल सिंह, माननीय नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी श्री उदल जी, माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) श्री राम स्वरूप जी, माननीय नेता जनता पार्टी श्री महबूब अली जी और हमारे एरी साहब ने जो इस सदन में शोक संवेदना से संबंधित विचार रखे, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए यह कहना चाहूंगा कि आज हमारे बीच से, हमारे समाज से और देश से ऐसे महान विचारक, सत्यवादी, अविनाशकवादी, नैतिकतावादी और आदर्शवादी जो एक-एक करके जुदा हो रहे हैं, जिनके विचारों से, जिनके कार्यों से, जिनके आदर्शों से, जिनके सिद्धान्तों से हमारा समाज और प्रदेश और देश लाभान्वित होता रहा है, हम विस्तार में न जाकर, यह कहते हुए कि जो हमारे समाज सेवियों ने, हमारे समाज और देश को दिया है, वह निश्चित तौर से देश के इतिहास की और देश के इतिहास के लिए एक निधि बनी हुई है, उससे हमें और हमारे आगे आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी ।

अब हम संक्षेप में अपने दिवंगत साथियों के प्रति जो आज हमारे बीच में नहीं हैं, कुछ विचार भी व्यक्त करना चाहेंगे । सबसे पहले मैं श्रीमती विमला सिंह जी के संबंध में कह देना चाहता हूं कि एक बार वह विधान सभा में चुनकर आयीं लेकिन उनका एक बार चुनकर आना हमारे देश के लिए और समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण था । हमारे देश की महिलाएं स्वतंत्रता संग्राम में भी रही हैं और आज भी समाज सेवा में लगी हैं लेकिन पुरुषों के अनुपात में उनकी संख्या बहुत कम है वह समाज सेवा में बहुत पीछे हैं । इसकी आज बहुत बड़ी आवश्यकता है । उन्होंने देश की महिलाओं और प्रदेश की महिलाओं में समाज सेवा का एक नमूना प्रस्तुत किया । उससे हमारे देश की और प्रदेश के महिला जगत में, समाज के प्रति देश के प्रति सेवा करने की जागृति पैदा हुई है ।

इसके साथ ही साथ मैं मुहम्मद अंसारी साहब के बारे में यह कह देना चाहता हूं कि इन्होंने बाराबंकी के समाज सेवा के माध्यम से जो दिया है उसकी क्षतिपूर्ति बाराबंकी के लिए ही नहीं सारे प्रदेश के लिए दुखद है और उनकी पूर्ति बहुत ही मुश्किल से होगी । आगे मैं श्री गणेश चन्द्र जी काछी जो मैनपुरी के रहने वाले थे और समाज सेवी थे कुशल राजनीतिज्ञ थे उनके बारे में यह कह देना चाहता हूं कि वह समाज सेवा के आधार पर ही और समाज सेवा के सहारे ही इस विधान सभा में तीन बार चुनकर आए जनता ने उनके गुणों के कारण ही विधान सभा में आने का अवसर प्रदान किया । वह शोषित, पीड़ित और दबे पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए बहुत चिंतित रहते थे वह बहुत गुणवान थे मैनपुरी जनपद के लिए ही नहीं सारे देश के लिए जो विचार वह छोड़ गए हैं, बहुत माने रखते हैं और इनसे हमें सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी ।

अब मैं सरदार तेजा सिंह जी के बारे में कुछ कहना चाहूंगा । उन्होंने गाजियाबाद में रहकर समाज की बहुत बड़ी सेवा की है । जो सामाजिक कार्य उन्होंने किया उसके आधार पर जनता ने उन्हें बहुत प्यार दिया और तीन बार चुनकर वह इस सदन में आये । वह बहुत अच्छे विचार छोड़ गए हैं और बहुत से बहुमूल्य सुझाव देने के लिए जनता

ने उनको वहां भेजा । उन्होंने बहुत लम्बी उम्र प्राप्त की और लम्बे अर्से तक वह समाज की सेवा करते रहे । पालीवाल जी हमारे जनपद और तहसील के रहने वाले थे और हमारे कार्यक्षेत्र जहां पर मैं 31 वर्ष तक प्रधानाचार्य रहा उसी कस्बे हरचन्दपुर के रहने वाले थे । कई बार स्वतंत्रता संग्राम के सिलसिले में जेल गए वह कांग्रेसी विचारधारा के थे । उन्होंने सन्यास ले लिया था । मैं कारण नहीं बताऊंगा लेकिन उन्होंने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी थी । मैं उनके विचारों और सिद्धान्तों के बारे में एक बात कह देना चाहता हूं कि वह बहुत स्पष्टवादी थे कोई उनसे नाराज हो जाय तो उसकी चिन्ता नहीं थी लेकिन वह स्पष्ट बोलते थे, सही बोलते थे, चाहे किसी को बुरा ही क्यों न लगे । वह बहुत अच्छे साहित्यकार थे । साहित्य में उनकी रुचि थी । जब वह बैठकर चर्चा करते थे तो कबीर, तुलसी और सूर से लेकर श्रृंगारी कवि बिहारीलाल जिन्होंने सतसई ग्रन्थ की रचना की है, का जिक्र किया करते थे । सतसई की उन्हें बहुत बड़ी जानकारी थी । उनको सतसई के तमाम दोहे याद थे और समय-समय पर वह उनको कहा करते थे । मैं इस सदन को यह जानकारी देना चाहता हूं कि वह अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू तीनों भाषाओं के बहुत बड़े ज्ञाता थे । वह उनको लिख सकते थे, पढ़ सकते थे । हमारे जनपद को पालीवाल जी की सेवाएं मिलती रहीं, वह अभूतपूर्व थीं । आज हमारा जनपद और सारा प्रदेश उनकी सेवाओं को याद करता रहेगा ।

मदन मोहन जी मिश्र जो 78 वर्ष के थे और दो बार रायबरेली से चुनकर इस सदन में आए उनकी जो सेवाएं थीं वह बड़ी महत्वपूर्ण थी उनसे हमें प्रेरणा मिलती है ।

श्री कमरुद्दीन जी मुजफ्फरनगर के रहने वाले थे वह सदन में चुनकर आए और उन्होंने समाज की और देश की सेवा की उन्होंने प्रदेश को अपने विचारों से गौरवान्वित किया ।

इसके बाद मैं नाम ले रहा हूं श्री महावीर सिंह राणा का जो दो बार इस विधान सभा के लिए सहारनपुर से चुनकर आए और विधान परिषद् के सदस्य हुए। उन्होंने इस प्रदेश और इस समाज की जो सेवा की है उससे हम बहुत लाभान्वित हुए हैं । वह हमारे लिए आदर्श छोड़ गए हैं ।

इसके साथ ही गंगा स्वरूप जी भटनागर जिन्होंने 3 वर्ष विधान सभा में नेतृत्व किया और अपने विचारों से कार्यों से देश, समाज और प्रदेश को एक बहुत बड़ी निधि दी । इसके साथ मैं नाम ले रहा हूं ऐसे व्यक्ति का जिन्होंने सर्वाधिक आयु प्राप्त की, श्री शिव राम राय जी 93 वर्ष की लम्बी आयु पाकर हमसे विदा हुए । विधान सभा में भी वह चुनकर आये । विधान सभा के अन्दर और बाहर समाज और देश और प्रदेश को उनकी बहुत बड़ी देन रही और लोग लम्बे अर्से तक उनके विचारों से लाभान्वित होते रहे । इसके बाद मोहम्मद रफी खान साहब जो 4 बार शाहजहांपुर से चुनकर आये । हम उनके प्रति क्या कहें, सचमुच हमारी उनसे 2 बार वार्ता हुई । वह बड़े खुले दिल से और बहुत ही आत्मीयता से बात करते थे और पूरी तरह से वह भारतीयता में रंगे हुए थे । वह किंचित मात्र भी यह सुनना नहीं चाहते थे कि भारत हमारी मातृ भूमि नहीं है ।

इसके साथ ही साथ आज हम एक ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की भी यहां चर्चा करते हुए शोक श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहेंगे और वह हैं हमारे मुजफ्फर हुसैन साहब जो अपनी लोकप्रियता के कारण 6 बार इस सदन

में चुनकर आये और अनेकानेक बार स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में अगली कतार में खड़े होकर अगुवाई करते हुए वह जेल गये । वह पूरी तरह से देश के एक महान राजनीतिज्ञ ही नहीं थे, मार्गदर्शक भी थे । आज हम सब लोगों के बीच से ऐसी महान विभूतियां उठकर चली गयी, हमारे बीच में नहीं रहीं लेकिन हम सब लोग, हमारा समाज और देश और प्रदेश इन महान विभूतियों से प्रेरणा लेता रहेगा । उनका जो इतिहास बनेगा उससे हमारी आगे आने वाली पीढ़ी भी प्रेरणा लेती रहेगी । इन्हीं शब्दों के साथ हम सभी विभूतियों के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना कर रहे हैं कि वह उनकी दिवंगत आत्माओं को शाश्वत शान्ति दें एवं उनके शोक संतप्त और दुखी परिवारजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें । अब हम सब लोग 2 मिनट के लिए खड़े होकर मौन श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सदन ने 2 मिनट का मौन रखा ।)

गुजरात के मुख्य मंत्री एवं कुशल नेता, श्री चिमन भाई पटेल के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)–

माननीय अध्यक्ष जी, सदन के समक्ष एक महान दुखद समाचार रख रहा हूं । स्वर्गीय चिमन भाई पटेल, मुख्य मंत्री, गुजरात जिनका कि एक सप्ताह पहले 17 फरवरी, को निधन हो गया । स्व0 चिमन भाई पटेल जो केवल मुख्यमंत्री ही नहीं थे वरन् वे देश के कुशल नेताओं में से थे । छात्र जीवन से ही वे पढ़ने लिखने में विलक्षण बुद्धि के थे और नेतृत्व के गुण उन में उत्पन्न हो गए थे, उन्होंने छात्र जीवन में राजनीति में प्रवेश भी किया, पढ़ने लिखने का भी काम किया, अर्थशास्त्र में एम0ए0 पास किया । वे प्राध्यापक भी रहे । वे 1967 में हितेन्द्र देसाई मंत्रिमण्डल में मंत्री बने । उसके बाद 1972 में घनश्याम दास ओझा मंत्रिमण्डल में मंत्री बने और उसके बाद गुजरात के मुख्यमंत्री बने । जिस समय वे गुजरात के मुख्यमंत्री बने, उस समय उनके सामने राष्ट्रीय स्तर के बहुत बड़े आन्दोलन खड़े हुए थे । हम जरूर उस आंदोलन में उनके खिलाफ थे, हमारे कई साथी गुजरात में भी काम कर रहे थे और जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में आंदोलन चल रहा था छात्रों का । वे अलग बात है कि आंदोलन के क्या कारण थे । इतने बड़े आंदोलन में भी मैंने उनको निराश नहीं देखा ।

यह एक संयोग था कि मुख्यमंत्री के रूप में दिल्ली में हमारा उनसे सम्पर्क हो गया था । आंदोलन के चलते समय, उसके बाद वे कांग्रेस पार्टी से अलग हो गये और अपना एक दल भी बनाया और उसके बाद दल बनाने के बाद चौधरी साहब के नेतृत्व में लोक दल में शामिल हो गये । लोक दल में हम और वे राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में बैठकों में लगातार साथ-साथ काम करते रहे । उसके बाद गुजरात की राजनीति में और देश की राजनीति में उन्होंने हमेशा हिस्सेदारी ली । बहुत से राष्ट्रीय स्तर पर कार्य हुए, उसमें चिमन भाई पटेल का योगदान रहा । वे बहुत बड़े अर्थशास्त्री और कुशल प्रशासक थे । उनके निधन से हमारे देश ने एक बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ कुशल प्रशासक और अर्थशास्त्री खो दिया । उन्होंने संकल्प किया था कि हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा औद्योगिक विकास गुजरात में होगा । 50 हजार करोड़ रुपये का उन्होंने अभी-अभी पूंजी निवेश का गुजरात के विकास के लिए प्रयास किया था ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

हम दोनों साथ-साथ मुख्य मंत्री थे, एक ही दल के थे । औरैया की एक सबसे बड़ी योजना थी मगर हमारे और उनके बीच अच्छे संबंध होते हुए भी हमारे उनके बीच में अलग-अलग राय थी । हम चाहते थे कि यह प्रोजेक्ट उत्तर प्रदेश को मिले मगर वह चाहते थे कि यह उनको मिले । मगर हमने उन्हें समझा-बुझाकर फैसला अपने हक में करवा लिया । 1989 में जब विधान मण्डल का नेता चुना जाना था तो वे पर्यवेक्षक के रूप में लखनऊ आये थे । जब विधान मण्डल दल का नेता चुना गया तो उन्होंने ही घोषणा की थी । हमारे और उनके बीच गहरा रिश्ता था । बिहार का जब पर्यवेक्षक बना, मुख्य मंत्री के चयन के लिए तो सहयोग के लिए स्व0 चिमन भाई पटेल को भी मेरे साथ रखा गया ।

बिहार के मुख्य मंत्री चयन के समय ही हमारे चिमन भाई पटेल ने पूरी कार्यवाही की थी । इसके अलावा जो भी दिल्ली में परिवर्तन आए हमने और उन्होंने ही निर्णय लिए । वे गुजरात में मुख्य मंत्री थे और हमारा और उनका सम्पर्क दूसरे तीसरे दिन होता था और हम लोग मिलकर काम करते थे । आज मैं अपने निजी साथी जिनके साथ काम करने का मौका मिला, पार्टी के संगठन के लिए, सत्ता चलाने के लिए उनकी मृत्यु से शोक संतप्त हूं । अभी निधन के एक सप्ताह पहले ही उनसे मेरी टेलीफोन पर वार्ता हुई थी । उन्हें पता चला कि मैं पहली मार्च को गुजरात आने वाला हूं तो उन्होंने मुझे राय दी कि अभी गुजरात में न आयें, कुछ दिनों के बाद आयें जिससे हम भी रहेंगे और आपसे बातचीत भी करेंगे । हमने उनकी बात को स्वीकार किया और पहली मार्च वाला अपना कार्यक्रम रद्द किया । हम नहीं समझते थे कि चिमन भाई पटेल जैसे महान नेता से हम दुबारा बात नहीं कर पायेंगे, उन्हें देख नहीं पायेंगे ।

उनका निधन अचानक दिल का दौरा पड़ने से हुआ । उनसे कुछ और मिलने वाले साथियों ने हमें बताया कि 16 फरवरी को वह पूरे दिन हमारे साथ रहे उन्होंने हमारे साथ नाश्ता किया, खाना खाया । उन्होंने उनका एक कार्यक्रम में भाषण सुना और उसके बाद खाना खाया और फिर सोने के लिए चले गए और जब वे सबेरे उठे तो उन्हें फूल चढ़ाने पड़े । उन्होंने देश और प्रदेश की सेवा की और हमारे साथी पार्टी में रहे । पार्टी का जब नाम रखा गया, जब जनता दल से अलग हुए थे, समाजवादी पार्टी तो हमने उनसे टेलीफोन पर राय मांगी तो उन्होंने दो दिन का समय मांगा और अन्त में अपनी सहमति दे दी । हमारा और उनका निकट से संबंध रहा है । उनका काम करने का तरीका और इस देश के विकास के लिए, प्रदेश के विकास के लिए अचानक कार्यक्रमों को बनाकर दूसरे देशों में जाना और वहां के उद्योगपतियों से सम्पर्क करके प्रदेश और देश के विकास के लिए पूंजी निवेश कराना इस सबमें उनकी विशेष रुचि थी । अपने देश के हित के लिए उनकी विशेष रुचि थी ।

उन्होंने देश के विकास के लिए बहुत बड़ा कार्यक्रम बना रखा था । वह हमसे भी कहते थे कि उत्तर प्रदेश में औद्योगीकरण की बड़ी सम्भावनाएं हैं, उत्तर प्रदेश में औद्योगीकरण का विकास क्यों नहीं हो रहा है । हमने उनसे कहा था कि हम आयेंगे आपके पास, आपसे मिलेंगे और हम भी आपका मार्गदर्शन चाहेंगे । हमारे उनके गहरे रिश्ते थे, दल में हमारे साथी थे, साथ काम भी किया था और समय-समय पर होने वाली बैठकों में साथ-साथ निर्णय भी लिए थे । मुझे वह दिन भी याद है, जब हम लोग पूरी-पूरी रात साथ-साथ बात करते ही गुजार

देते थे । मुझे वह भी दिन याद है जब हम दोनों लोगों की एक राय थी और प्रधान मंत्री चन्द्रशेखर जी की अलग राय थी, उस मतभेद के कारण उन्होंने चन्द्र शेखर जी का साथ छोड़ा था, हम उन बातों को यहां कहना नहीं चाहते, उनका निर्णय सही था या गलत, वह बात अलग है । लेकिन उन्होंने मुझसे रास्ते में कहा था, हमलोग एक ही गाड़ी में बैठे थे कि हमें कुछ सोचना पड़ेगा । उन्होंने एक कुशल प्रशासक, विद्वान अर्थशास्त्री के रूप में देश के विकास के लिए बहुत काम किया, गुजरात के विकास के लिए काम किया, इसके लिए गुजरात तो उनका ऋणी रहेगा ही, लेकिन हम जैसे सदन में बैठे हुए लोग, इस प्रदेश के विकास के लिए जरूर उनके रास्ते पर चलेंगे । हम और हमारा दल उनके निधन से दुःखी है, मैंने निजी तौर पर अपने साथी को खोया है, मैं उनके प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप उनके परिवार तक, उनकी पत्नी जो राज्यसभा में हैं, उन तक, उनकी पार्टी और उनके सभी सहयोगी समर्थकों तक हमारी संवेदना पहुंचाने की कृपा करें ।

*नेता विरोधी दल (श्री कल्याण सिंह)–

श्रीमन्, आज गुजरात के मुख्यमंत्री स्वर्गीय श्री चिमन भाई पटेल हमारे बीच में नहीं रहे, इससे हम सभी बहुत दुखी हैं । उनका निधन 17 फरवरी, 1994 को हृदयगति रुक जाने के कारण से हो गया । उनका जन्म 2 जून, 1929 को हुआ था और अभी उनकी आयु केवल 65 वर्ष की थी। राष्ट्रीय एकीकरण परिषद् तथा राष्ट्रीय विकास परिषद् की दिल्ली में आयोजित होने वाली बैठकों में मुझे उनके साथ बैठने का सौभाग्य मिला और उन दोनों प्रकार की बैठकों में उनके महत्वपूर्ण सुझाव आते थे, वे उनके मौलिक चिन्तन के प्रतीक थे । वह एक कुशल प्रशासक थे, अनुभवी राजनेता थे, जानेमाने अर्थशास्त्री थे । यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आज गुजरात में जो कुछ औद्योगीकरण की गति बढ़ी है, उसमें चिमन भाई पटेल का बहुत भारी योगदान है । कोई सोच भी नहीं सकता था कि अचानक वह हमसे विदा हो जायेंगे उनके उठ जाने के कारण से जो रिक्त हुई है, जो अपूरणीय क्षति हुई है, श्रीमन्, उसको भरा जाना बहुत कठिन काम है, दुष्कर काम है ।

राष्ट्रीय एकीकरण की बैठक में और राष्ट्रीय विकास परिषद् की बैठक में उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में, आर्थिक विकास के संबंध में जब-जब भी जो-जो विचार प्रस्तुत किए थे, मुझे याद है कि पूरे सदस्य उनके विचारों से प्रभावित होते थे और मुझे यह भी याद है कि इन दोनों ही प्रकार की परिषदों की बैठक में उनके द्वारा प्रस्तुत किये गये विचारों से प्रभावित होकर इन परिषदों की बैठक का निर्णय भी उनके सुझावों के अनुसार कई बार हुए थे । आज यह केवल गुजरात प्रदेश की ही क्षति नहीं है, सम्पूर्ण राष्ट्रीय क्षति है कि एक कुशल राजनेता हमसे विदा हो गया, देश का जाना-माना अर्थशास्त्री हमसे विदा हो गया, विकास के पथ पर मजबूती से कदम बढ़ाने वाला दृढ़ संकल्प, दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्तित्व हमसे विदा हो गया । स्व0 चिमन भाई पटेल के निधन से हम बहुत दुःखी हैं । मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि स्व0 चिमन भाई पटेल की दिवंगत आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान करे और उनके शोकाकुल परिवार को इस गहरे दुःख को सहन करने की क्षमता, धैर्य और साहस प्रदान करे । मैं और मेरा दल उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता है और श्रीमन्, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे और मेरे दल की शोक संवेदनाएं उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

*श्री प्रमोद तिवारी–

मान्यवर, 2 जून, 1929 चिखोदरा गांव में बड़ोदरा जनपद में एक कृषक परिवार में चिमन भाई पटेल जी का जन्म हुआ था तो किसी ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि आने वाले दिनों में वह राष्ट्र की राजनीति को अपनी विद्वता और योग्यता से इतना प्रभावित करेंगे और इतने बड़े अर्थशास्त्री बनेंगे पर वक्त ने उनकी कर्मठता, उनकी निष्ठा, उनकी लगनशीलता से बहुत ही कम आयु में उन्हें एक प्रख्यात अर्थशास्त्री के रूप में उनकी पहचान करा दी । वह इससे संतुष्ट नहीं हुए और बाद में गुजरात की राजनीति में उन्होंने प्रवेश किया और उसके साथ ही मान्यवर, सबसे पहले हितेन्द्र देसाई और घनश्याम ओझा के मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में शामिल होकर कुशल प्रशासक की छवि छोड़ी । 1989 में जनता दल और भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन से जो सरकार बनी, उसके वह मुख्य मंत्री भी बने । मान्यवर, यह तो उनकी राजनीति में पहुंच थी ।

जब वह राष्ट्र की मुख्य धारा से कांग्रेस में शामिल हो गए तो मुझे उनके साथ काम करने का अवसर मिला और उनका तीन-चार चीजों ने बहुत प्रभावित किया । जिस समय उन्होंने गुजरात की बागडोर संभाली थी, गुजरात प्रदेश चौथे प्रदेश के रूप में उन्नतिशीलता के पायदान पर था, परन्तु जब उनका निधन हुआ तो यह उनकी उपलब्धता थी कि आज महाराष्ट्र के बाद गुजरात का नाम विकास के मायने में लिया जाता है । आज अपने प्रयास से, अपने नेतृत्व से प्रदेश को दूसरे नम्बर पर चौथे नम्बर से पहुंचा दिया । मान्यवर, नर्मदा सरोवर प्रोजेक्ट एक ऐसा विषय था जिस पर विपरीत विचारधाराएं थीं, एक तरफ राष्ट्र की वह संस्थायें थी, जिन्हें बहुतों का समर्थन प्राप्त था, वह विरोध कर रहे थे, उस समय दृढ़ता की जरूरत थी । उन्होंने गुजरात के हित को सर्वोच्च रखा, गुजरात के किसानों के हित को सर्वोच्च रखा और पूरी दृढ़ता के साथ उन्होंने गुजरात में नर्मदा परियोजना के निर्माण के लिए जो दृढ़ता दिखायी उसके लिए गुजरात सदा-सर्वदा उनका ऋणी रहेगा, उनको आदर के साथ याद करता रहेगा । तीसरी जो सबसे महत्वपूर्ण बात है, जिसने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया वह यह है कि जब उन्हें लगा कि गुजरात मूल के जन्मे लोग जो विदेशों में जाकर व्यापार के क्षेत्र में दूसरे देशों के लिए धन एकत्र कर रहे हैं तो वह यहां पर पूंजी निवेश करें और अपने मूल प्रदेश गुजरात में लौटकर यहां पर उद्योग लगायें और पूंजी निवेश करें ।

जब यह विचार उनके मन में घर कर गया तो उन्होंने कई देशों का भ्रमण किया और वहां पर जो गुजरात मूल के लोग थे उनसे प्रार्थना की कि वह गुजरात लौटें और वहां पर पूंजी निवेश करें । आज उसी की बदौलत गुजरात चौथे नम्बर से उठकर दूसरे नम्बर पर आ गया है । इन तीन योग्यताओं के कारण और उनकी विद्वता के कारण उन्हें सदा सर्वदा याद किया जाता रहेगा । उनका कम आयु में ही निधन हो गया, अकस्मात् निधन हो गया । उनका यह निधन तब हुआ जब हमारे दल को और गुजरात-दोनों को उनकी योग्यता की और विद्वता की जरूरत थी । मैं और मेरा दल आज उनके निधन से काफी दुःखी है । मेरा आपसे निवेदन है कि उनके परिवार में उनकी पत्नी जो स्वयं सांसद हैं, उनके शोकाकुल परिवार जनों तक तथा गुजरात की जनता तक हमारे ये शोक संवेदना के भाव पहुंचाने का कष्ट करें । मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन्हें विनम्र प्रणाम करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

श्री किरनपाल सिंह–

मान्यवर, गुजरात के मुख्य मंत्री श्री चिमनभाई पटेल के आकस्मिक निधन पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल व माननीय नेता, कांग्रेस ने जो संवेदना के भाव प्रकट किये हैं, उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । श्री चिमनभाई पटेल का निधन 17 फरवरी, 1994 को सुबह 7.50 पर अचानक दिल का दौरा पड़ने से हो गया । वह एक महान अर्थशास्त्री थे, अच्छे प्रशासक थे । यदि यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वह निधन की तारीख तक गुजरात की राजनैतिक बगिया के सबसे विशाल वृक्ष थे । मैं भी श्री चिमनभाई पटेल जी को 70 के दशक के आसपास, जब मैं जिला छात्र युवा वाहिनी का कनवीनर था, तब से जानता था । तभी से राजनैतिक स्तर पर उनके आन्दोलनों व रास्तों को देखता रहा हूं । उनका निधन आज ऐसे समय पर हुआ जब गुजरात का विकास व चिमनभाई पटेल एक दूसरे के पर्यायवाची बन गये थे । यह गुजरात की जनता के लिए ही नहीं अपितु पूरे देश के लिए एक अपूर्णीय क्षति हुई है । वह गुजरात को एक नया गुजरात बनाने का सपना संजोये हुए थे । ऐसे महान नेता के अकस्मात निधन से हमें बहुत दुःख है और मेरा दल भी दुःखी है । मेरा दल और मैं दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन है कि हमारे ये शोकोद्गार उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

(समय 1 बजकर 5 मिनट)

श्री उदल–

मान्यवर, गुजरात के मुख्य मंत्री चिमनभाई पटेल के आकस्मिक निधन पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने व्यक्त किये हैं उनसे मैं और मेरा दल अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, आज के समय में माननीय चिमनभाई पटेल जैसा अर्थशास्त्री समाज सेवी और राजनीतिज्ञ देश और समाज के लिए बहुत ही आवश्यक था । चिमन भाई पटेल जो आज से ही नहीं सन् 67 से ही गुजरात के मंत्रिमंडल में शामिल रहे । घनश्याम ओझा जी की सरकार में भी वह मंत्री रहे । उनके निधन से एक बहुत बड़ी हैसियत का व्यक्ति गुजरात ने ही नहीं पूरे देश ने खो दिया जिसका सबसे बड़ा नुकसान देश के साथ-साथ गुजरात का भी होगा जहां उनकी कमी पूरी नहीं की जा सकती है । चिमन भाई पटेल के निधन पर मैं और मेरा दल बहुत दुःखी है और आपसे निवेदन है कि मेरे और मेरे दल के शोकोद्गार उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें । इन शब्दों के साथ मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री राम स्वरूप–

मान्यवर, माननीय, गुजरात के मुख्य मंत्री चिमन भाई पटेल के निधन पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता कांग्रेस, माननीय नेता जनता दल और माननीय कम्युनिस्ट पार्टी ने व्यक्त किये हैं मैं और मेरा दल उनसे अपने को सम्बद्ध करता है । गुजरात के मुख्य मंत्री चिमन भाई पटेल का निधन 17 फरवरी, 1994 को दिल का दौरा पड़ने से हो गया । उन्होंने अपने प्रदेश के

मंत्रिमंडल और मुख्य मंत्री पद पर रहते हुए जो सेवा की वह गौरव की बात है क्योंकि वह एक कृषक परिवार में पैदा होकर इस पद पर पहुंचे । वह बहुत प्रखर व्यक्तित्व के थे और उन्होंने जो समाज की सेवा की वह हमेशा याद रहेगी । उनका संबंध कांग्रेस पार्टी से रहा । उनके निधन से हम दुःखी हैं और आपसे प्रार्थना है कि हमारे और हमारे दल की संवेदना उनके परिवार तक भेजने की कृपा करें । उनको मैं और मेरा दल श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

श्री काशी सिंह ऐरी–

माननीय अध्यक्ष जी, एक महान प्रशासनिक व्यक्ति, कुशल राजनीतिज्ञ चिमन भाई पटेल आज हमारे बीच में नहीं रहे । यह केवल गुजरात के लिए ही नहीं तूरे देश के लिए अपूर्णीय क्षति है । इसका सब देशवासियों को बहुत दुःख है, बेहद अफसोस है । इसके साथ ही मैं यह जरूर कहूंगा कि यह हम सब के लिए गौरव की बात है कि वे किसान परिवार में पैदा हुए । अर्थशास्त्र की शिक्षा ली और उसका उपयोग जो सही माने में हो सकता था वह अपने प्रदेश और देश की जनता के काम में लाये जो बड़े गौरव और प्रेरणा की बात है । मान्यवर, 17 फरवरी, 1994 को श्री चिमन भाई पटेल का आकस्मिक निधन हुआ है जो हम सब के लिए एक आकस्मिक दुर्घटना थी और देश की राजनीति एवं खासतौर से गुजरात के विकास के लिए जिसके लिए वह कृत संकल्प थे । मान्यवर, हमें ऐसा सौभाग्य नहीं मिला है उनसे भेंट करने का लेकिन उनके बारे में पढ़ते रहे हैं तो मुझे ऐसा लगा कि वह एक डायनमिक पर्सनाल्टी के व्यक्ति थे । उनके निर्णय बहुत ही मजबूत होते थे । उन्होंने जो भी राजनीतिक निर्णय लिए वह बहुत ही ठीक होते थे और उनकी डायनमिक पर्सनाल्टी का नतीजा था कि उसके बल पर उन्होंने बहुत बड़े-बड़े कार्य किये ।

मान्यवर, जहां तक नर्मदा सरोवर परियोजना का प्रश्न है उसमें इस बात का विवाद हो सकता है कि इससे गुजरात का कितना भला होगा । यह तथ्यों और आंकड़ों का खेल हो सकता है । वहां के रहने वाले आदिवासियों को इस परियोजना से कितना नुकसान होगा जैसा कि नेताओं ने कहा है, इस पर विवाद हो सकता है लेकिन इतने बड़े विवाद के बावजूद भी उन्होंने जो दृढ़ता, शक्ति और निर्णय इस परियोजना के बारे में कर दिखाया वह प्रशंसनीय है । इस प्रकार कुल मिलाकर उन्होंने जो कुछ किया वह गुजरात की बेहतरी और जनता की भलाई के लिए तथा देश को आगे ले जाने के लिए किया । मान्यवर, वह हमारे बीच में और रहते तो देश और गुजरात को बहुत कुछ देते यह हमें उनसे अपेक्षा थी । लेकिन नियति का खेल अजीब है कि वह हमारे बीच में नहीं रहे । इनके निधन पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन और मा0 नेता विरोधी दल एवं अन्य माननीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने को संबद्ध करते हुए आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी और हमारे दल की शोक संवेदनायें उनके दुःखी और शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें । इसके साथ ही मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें ।

श्री महबूब अली–

मान्यवर, चिमन भाई पटेल जी के आकस्मिक निधन पर पूर्व नेताओं ने जो शोकाकुल विचार रखे उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, आज श्री चिमन भाई पटेल हमारे बीच नहीं रहे हैं । वे किसान परिवार में पैदा हुए थे और किसान होने के नाते उन्हें देश की राजनीति में एक कुशल प्रशासक और अर्थशास्त्री के रूप में देखा गया है उससे प्रेरणा लेनी चाहिए । मान्यवर, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि शोकाकुल परिवार को मेरी तरफ से और मेरे दल की तरफ से शोकोद्गार भेजने की कृपा करें ।

आज उसकी भरपाई कर पाना बहुत मुश्किल है, लेकिन उनसे देश को, देश की राजनीति को, देश की जनता को और खासकर गुजरात की जनता को उनके कुशल प्रशासक होने से, कुशल प्रशासन से जो प्रेरणा मिली है, उससे शायद भविष्य में वहां की जनता को कुछ राहत मिले और उनके बताए रास्ते, दिशा निर्देशन में चलकर वह विकास कर सकें । मैं उनके शोकाकुल परिवार को अपनी शोक संवेदना-उद्गार आपके द्वारा पहुंचाने के लिए आपसे निवेदन करता हूं । आप उनके परिवार को मेरे शोकोद्गार पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री अध्यक्ष–

आज हम एक ऐसे विशिष्ट व्यक्ति और महान् समाज सेवी, उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ तथा किसानों व गरीबों के नेता स्वर्गीय चिमन भाई पटेल की याद करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं । इस सन्दर्भ में जो विचार हमारे नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता कांग्रेस पार्टी, नेता जनता दल, कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी व भारतीय) के नेताओं के साथ ही साथ जनता पार्टी के नेता और श्री एरी जी के जो शोक से भरे हुए विचार आए, उनसे मैं अपने को संबद्ध करते हुए यह कहना चाहूंगा कि हमारे देश के एक बहुत बड़े समाजसेवी श्री चिमन भाई पटेल, जो असमय में ही हमारे बीच से चले गए, उनकी सेवाओं की, उनके विचारों की अभी बहुत समय तक प्रत्यक्ष रूप से हमें आवश्यकता थी । यद्यपि उनके आदर्श, उनके सिद्धान्त और उनके कृत्य, जो उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन में जनता की भलाई के लिए किए, वह उदाहरण स्वरूप, प्रेरणा स्वरूप उनके बाद भी इस पीढ़ी को और आगे आने वाली पीढ़ी को भी प्रेरणा देते रहेंगे ।

चिमन भाई पटेल 65 वर्ष के थे । कोई लम्बी आयु नहीं थी । अपने सम्पूर्ण जीवन काल में, विद्यार्थी जीवन से लेकर मृत्युपर्यन्त–समाज और देश की, शोषित, पीड़ित वर्ग को और किसानों को जो उन्होंने दिया उसकी सराहना और उससे फायदा हमारे देश और समाज को मिलता रहेगा । वह हमारे स्वर्गीय वल्लभ भाई पटेल और स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह जी के रास्ते पर चलकर देश के गरीब किसानों को आगे बढ़ाने के लिए सतत् प्रयत्नशील थे । प्रदेश के विकास के लिए, गरीबों के रोजगार देने के लिए औद्योगिक विकास के लिए बहुत प्रयत्नशील थे । दूसरे देशों से पूंजी निवेश को बहुत इन्होंने अपने प्रदेश में बढ़ाया और सफलता भी मिली । मैं यहां यह कहना उचित समझता हूं कि हमारे राज नेता जो हमारे बीच नहीं हैं, उनके कार्यों को, उनके विचारों को और उनके

जो सिद्धान्त और आदर्श अब हमारे बीच में रह गये हैं, उनका हम सब अनुसरण करें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करूंगा कि वो उनके शोक संतप्त परिवार के धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें और उनकी आत्मा को शाश्वत् शान्ति प्रदान करें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं यह कहते हुए कि सचिव विधान सभा हमारे सभी नेताओं की भावनाओं को, उनकी श्रद्धांजलियों को, मेरी श्रद्धांजलि और भावनाओं सहित इन दिवंगत नेताओं के परिवारों तक पहुंचाने की कार्यवाही करें। अब हम सब 2 मिनट के लिए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

(माननीय सदस्यों ने दिवंगत आत्मा के प्रति खड़े होकर मौन रखा।)

अब हम उठते हैं। कल 11.00 बजे पुन: बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 1 बजकर 20 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

लखनऊ :

22 फरवरी, 1994।

प्रेम चन्द्र सक्सेना,

सचिव, विधान सभा,

उत्तर प्रदेश।

पी0एस0यू0पी0–एल0 219 वि0 सभा (374)–1994–813।

उत्तर प्रदेश विधान सभा